नयचक्र प्रकाश

रचयिता

अध्यात्मयोगी, न्यायतीर्थ, सिद्धान्तन्यायसाहित्यशास्त्री

पूज्य श्री क्षु० मनोहरजी वर्णी ''सहजानन्द'' महाराज

प्रकाशक

श्री सहजानंद शास्त्रमाला, मेरठ

एवं

श्री माणकचंद हीरालाल दिगम्बर जैन पारमार्थिक न्यास

गांधीनगर, इन्दौर

Online Version : 001

भारतवर्षीय दि० जैन आत्मविज्ञान परीक्षाबोर्ड

नयचक्र प्रकाश

रचयिता—
अध्यात्म-योगी न्यायतीर्थ पूज्य श्री मनोहर जी वर्णी
'श्रीमत्सहजानन्द' महाराज

प्रकाशक—
मंत्री :
भारतवर्षीय दि० जैन आत्मविज्ञान परीक्षाबोर्ड

प्रति ११०० सन् १९७६ लागत ६० पैसे

卐 आत्मभक्ति 卐

मेरे शाश्वत शरण, सत्य तारणतरण ब्रह्म प्यारे ।
तेरी भक्ती में क्षण जाँय सारे ॥ टेक ॥

ज्ञानसे ज्ञानमें ज्ञान ही हो, कल्पनाओं का इकदम विलय हो ।
भ्रान्तिका नाश हो, शान्तिका वास हो, ब्रह्म प्यारे । तेरी. ॥ १ ॥

सर्व गतियों मे रह गति से न्यारे, सर्व भावों में रह उनसे न्यारे ।
सर्वगत आत्मगत, रत न नाहीं विरत, ब्रह्म प्यारे । तेरी. ॥ २ ॥

सिद्धि जिनने भि अबतक है पाई, तेरा आश्रय ही उसमें सहाई ।
मेरे संकटहरण, ज्ञान दर्शन चरण, ब्रह्म प्यारे । तेरी. ॥ ३ ॥

देह कर्मादि सब जगसे न्यारे, गुण व पर्ययके भेदोंसे पारे ।
नित्य अन्तःअचल, गुप्त ज्ञायक अमल ब्रह्म प्यारे । तेरी. ॥ ४॥

आपका आप ही प्रेय तू है. सर्व श्रेयों में नित श्रेय तू है ।
सहजानन्दी प्रभो, अन्तर्यामी विभो, ब्रह्म प्यारे । तेरी. ॥ ५ ॥

卐 आत्मरमण 卐

मैं दर्शनज्ञानस्वरूपी हूँ, मैं सहजानन्द स्वरूपी हूँ ॥टेक॥

हूँ ज्ञानमात्र परभाव शून्य, हूँ सहज ज्ञानघन स्वयं पूर्ण ॥
हूं सत्य सहज आनन्दधाम, मैं सहजानन्द.। मैं दर्शन. ॥१॥

हूँ खुद का ही कर्ता भोक्ता, परमें मेरा कुछ काम नहीं ॥
पर का न प्रवेश न कार्य यहां मैं, सहजानन्द०। मैं दर्शन. ॥२॥

आऊं उतरूं रमलूँ निजमें, निजकी निजमें दुविधा ही क्या ॥
निज अनुभवरससे सहजतृप्त, मैं सहजानन्द०। मैं दर्शन. ॥३ ।

कुछ शब्द

लोकमें सभी जीव सुख शान्ति चाहते हैं और सुख शान्तिके लिके भरसक प्रयत्न करते हैं, किन्तु सही सुख शान्तिका लेश भी प्राप्त नहीं कर पाते, मोही जीव विषय भोग उपभोग कीर्ति आदिके प्रसंगमें सुखकी कल्पना करते हैं, किन्तु वह कल्पना तो अल्पसमयको बनती है और उस प्रसङ्गसे रात दिन कष्ट विकल्प भोगने पड़ते हैं । तात्पर्य यह है कि संसारी लोक सुख शान्तिका सही उपाय नहीं पा सके । सही उपाय यह है कि जिसमें अपनी शान्ति हो उसका आश्रय किया जावे । शान्ति बाहर नहीं बाहरसे आती नहीं । शान्ति-धाम स्वयं ही है । स्वयंमें शान्ति नहीं तो कितने ही उपाय कर लो, शान्ति नहीं हो सकती । बालूमें तैल नहीं तो कितने ही उपाय कर लो तैल नहीं प्रकट हो सकता । शान्तिका धाम स्वयं हूं । शान्तिका उपाय शान्तिका धाम (आत्म स्वरूप) जानकर इस अपनेमें ही मग्न होना है । आत्मस्वरूपका सही परिचय करनेका आधार स्याद्वाद है जैसा कि प्रत्येक पदार्थके परिचयका आधार स्याद्वाद है । स्याद्वाद अनेक नयोंकी अपेक्षासे अनेक वस्तु धर्मका निर्णय करता है । एतदर्थ आवश्यक है कि नयोंका परिचय किया जाय तथा अध्यात्म-शास्त्रमें प्रयुक्त निश्चय व्यवहार उपचारका मूलनयोंसे सम्बन्ध कहाँ है यह विदित किया जावे । तथा जिनका मूलनयोंसे सम्बन्ध नहीं है। वे नयोंके किस अंशका प्रयोजन रखते हैं यह विदित किया जावे । सुयोगकी बात है कि सोनीपत में श्री ला० धनपाल सिंह जी सर्राफके सफल स्वाध्याय प्रेम को देख कर समयसारकी चतुर्दशाङ्गी टीकाके रचनेका विचार आया और उसकी भूमिका स्वरूप इस नयचक्र प्रकाशके रचनेका अवसर आया । और इसकी आधी रचना सोनीपतमें पञ्चदिवसीय प्रवासमें करली गई, शेष रचना सरधनामें हुई । सरधनामें श्री जीजी पंडिता कैलाशवती न्यायतीर्थ इस नयचक्र प्रकाश और समयसार चतुर्दशाङ्गी टीकाकी रचनाके जल्दी सम्पूर्ण करने के लिये अनुरोध करती रही अतः समयसार चतुर्दशाङ्गी टीकाकी भूमिका स्वरूप इस नयचक्र प्रकाशकी एक सप्ताहमें रचना कर ली गई । तथा समयसार चतुर्दशाङ्गी टीकाकी रचना वीर शासन जयंती सन् १६७६ से प्रारंभ कर शरदपूर्णिमा (अश्वित सुदी १५) तक तीन चौथाई कर ली गई ।

इस नयचक्र प्रकाशमें कुछ नय साधारण परिवर्तनके आशयसे दुबारा आगये हैं, कुछ नय वही के वही ज्ञान व कथनकी दृष्टिसे दुबारा आगये। कुछ नय अभेद आशयसे निश्चयमें हैं तो वे ही नय भेद आशयमें व्यवहारमें हो गये। कुछ नय सम्बन्धित भेद अभेद उपचार अनुपचार आदिके आशयसे निकटनय A. B. से संकेतित हैं। इन सब नयोंका परिचय करके हेयोपादयकी दृष्टिसे इनके विषयको समझकर निर्विकल्पताकी ओर ढलाव हो ऐसा पौरुष करना चाहिये यह नयचक्र महा गहनबन है। निष्पक्ष आत्महितामिलापी पुरुष ही इस नयचक्र गहनवनमें से गमन कर नयपक्षातीत शुद्धनयको प्राप्त करते हैं और आत्मानुभव पाते हैं।

— ॐ नमः शुद्धाय, ॐ शुद्धं चिदस्मि —

मनोहरवर्णी, सहजानन्द

अध्यात्मयोगी न्यायतीर्थ पूज्य श्री सहजानन्द महाराज द्वारा रचित

卐 परमात्म आरती 卐

ॐ जय जय अविकारी।

जय जय अविकारी, स्वामी जय जय अविकारी।
हितकारी भयहारी, शाश्वत स्वविहारी। ॐ··· ॥ टेक ॥

काम क्रोध मद लोभ न माया, समरस सुखधारी। स्वामी सम···
ध्यान तुम्हारा पावन, सकल क्लेशहारी। ॐ जय··· ॥ १ ॥

हे स्वभावमय जिन तुमि चीना, भव संतति टारी। स्वामी भव···
तुव भूलत भव भटकत, सहत विपति भारी। ॐ जय···॥ २ ॥

परसंबंध बंध दुख कारण, करत अहित भारी। स्वामी करत···
परम ब्रह्मका दर्शन, चहुँगति दुखहारी। ॐ जय··· ॥ ३ ॥

ज्ञानमूर्ति हे सत्य सनातन, मुनिमन संचारी। स्वामी मुनि···
निर्विकल्प शिवनायक, शुचिगुण भंडारी। ॐ जय···॥ ४ ॥

बसो बसो हे सहज ज्ञानघन, सहज शान्तिचारी। स्वामी सहज
टलें टलें सब पातक, परबल बलधारी। ॐ जय···॥ ५ ॥

ॐ

नयचक्र-प्रकाश

रचयिता—अध्यात्मयोगी न्यायतीर्थ पूज्य श्री १०५ क्षु०

मनोहरजी वर्णी सहजानन्द महाराज

पाठ १—नयज्ञान की आवश्यकता

वस्तुका ज्ञान प्रमाण और नयोंसे होता है। वस्तु उत्पादव्ययध्रौव्यात्मक है। ध्रौव्य न हो तो उत्पाद व्यय नहीं हो सकता, उत्पाद व्यय न हो तो ध्रौव्य नहीं हो सकता। ध्रौव्यसे वस्तुके द्रव्यपनेका बोध होता है। उत्पाद व्ययसे वस्तुके पर्यायपनेका बोध होता है। वस्तु द्रव्यपर्यायात्मक है। वस्तुका द्रव्यदृष्टिसे भी ज्ञान हो, पर्यायदृष्टिसे भी ज्ञान हो तो उसका पूर्ण ज्ञान होता है। एक दृष्टिसे ज्ञान करनेको नय कहते हैं। दोनों दृष्टियोंसे ज्ञान करनेको प्रमाण कहते हैं। प्रयोगतः नयोंसे वस्तुका ज्ञान होनेपर प्रमाणसे ज्ञान होता है और प्रमाणसे ज्ञान होनेपर नयोंसे ज्ञान होता है। प्रमाणके बिना निरपेक्ष नयोंसे ज्ञान होना मिथ्या है और प्रमाणपूर्वक नयोंसे ज्ञान होना सम्यक् है क्योंकि, प्रमाणसे ग्रहण किये गये पदार्थोंका अभिप्रायवश एकदेश ग्रहण करनेवाले ज्ञानको नय कहते हैं।

वस्तु शाश्वत निरन्तर द्रव्यपर्यायात्मक है। पर्यायके बिना द्रव्य नहीं रह सकता सो पर्यायें प्रतिक्षण होती रहती है। द्रव्यके बिना पर्यायें किसमें हों सो अन्वय बिना पर्याय हो ही नहीं सकती। इस प्रकार जब वस्तु सदा द्रव्यपर्यायात्मक है तो द्रव्यदृष्टिसे व पर्यायदृष्टिसे वस्तुका ज्ञान करना आवश्यक है। नयोंके विस्तारमें जितने भी नय हैं वे सब इन्हीं दोनों दृष्टियोंके भेद प्रभेद हैं। निष्कर्ष यह है कि वस्तुका परिचय पानेके लिये नयज्ञानकी महती आवश्यकता है। भले ही नय व प्रमाणके विकल्पसे अतिक्रान्त होकर ही आत्मानुभव होता है, किन्तु इस अतिक्रमणकी योग्यता वस्तुका परिचय किये बिना नहीं पाई जा सकती है।

पाठ २—नयोंके संक्षिप्त प्रकार

वस्तु द्रव्यपर्यायात्मक है। उसको जाननेके लिये नयके मूल दो प्रकार

आते हैं १– द्रव्यार्थिक नय, २–पर्यायार्थिक नय। द्रव्य ही जिसका प्रयोजन हो उस नयको द्रव्यार्थिक नय कहते हैं व पर्याय ही जिसका प्रयोजन हो उस नयको पर्यायार्थिक नय कहते हैं। द्रव्यार्थिक नयके ३ प्रकार हैं– १. नैगम नय, २. संग्रह नय, ३. व्यवहार नय। पर्यायार्थिक नयके ४ प्रकार हैं–१ ऋजुसूत्र नय, २ शब्द नय ३ समभिरूढ नय, ४ एवंभूत नय। इस प्रकार नय ७ हुए। इन सात नयोंमें ३ विभाग होते हैं–१–ज्ञाननय, २–अर्थनय व ३–शब्दनय। नैगम नय तो ज्ञाननय है क्योंकि वह संकल्प मात्रको प्रकट करता है, पदार्थको मुख्यतया नहीं कहता। संग्रह नय, व्यवहार नय व ऋजुसूत्र नय अर्थनय कहलाते हैं, क्योंकि ये पदार्थकी जानकारी कराते हैं। संग्रह नय व व्यवहार नय तो द्रव्यदृष्टिकी मुख्यतासे वस्तुकी जानकारी कराते हैं, किन्तु ऋजुसूत्र नय पर्यायदृष्टिकी मुख्यतासे वस्तुकी जानकारी कराता है। शब्दनय समभिरूढ नय व एवंभूत नय भी कराते तो जानकारी हैं पर्यायदृष्टिसे वस्तुकी, लेकिन शब्दकी मुख्यतासे जानकारी कराते हैं। अतः इन तीन अन्तिम नयोंको शब्दनय कहते हैं। अब सर्वप्रथम इन सात नयोंकी जानकारी कीजिये।

पाठ ३–द्रव्यार्थिक नैगमनय

संकल्पमात्रग्राही नैगमः। जो संकल्पको ग्रहण करे (जाने) वह नैगमनय है। नैगमनयमें अभेद व भेद दोनों विषय पड़े हैं। नैगमनय ३ प्रकारका होता है (१) भूतनैगमनय, (२) भाविनैगमनय, (३) वर्तमाननैगमनय। अतीतमें वर्तमानका आरोपण करना भूतनैगमनय है, जैसे कहना कि आज दीपावलीके दिन श्री वर्द्धमान स्वामी मोक्षको गये हैं। यहाँ जो कुछ कहा जा रहा है उसमें संकल्पकी मुख्यता है। भविष्यके बारेमें अतीतकी तरह कहना भावि-नैगमनय है, जैसे कहना कि अर्हन्त तो सिद्ध ही हो चुके। यहाँ भी सकल्पकी प्रधानता है। करनेके लिए प्रारम्भ किये गये कुछ निष्पन्न व अनिष्पन्न वस्तुको निष्पन्नकी तरह जहां कहा जाता है वह वर्तमाननैगमनय हैं, जैसे कहना कि भात (चावल) पक रहा है।

ये सभी नैगम नय संकल्पमें होनेवाले ज्ञान हैं। यहाँ द्रव्य पर्याय, भेद अभेद, सत् असत् का समन्वय पूर्वक ज्ञान चल रहा है जो संकल्पमात्र है। अतः

नैगमनय ज्ञाननय है। अर्थनय नैगमनयसे सूक्ष्मविषयरूप है। अर्थनयमें महा-विषयरूप संग्रहनय है। संग्रहनयसे सूक्ष्मविषयी व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय है, इससे सूक्ष्मविषयी ऋजुसूत्रनयनामक पर्यायार्थिक नय है।

पाठ ४–द्रव्यार्थिक संग्रहनय

संग्रहनयसे अनेक वस्तुओंका संग्रह जाना जाता है। प्रत्येक वस्तु अपने स्वरूपमात्र है। वह अखण्ड सत् है, निश्चयनय द्वारा ज्ञेय है। ऐसे अनन्त सतों का, सर्व सतों का संग्रह किसी साधारण धर्मकी मुख्यताकी दृष्टि होनेपर ज्ञात हो जाता है। जैसे सत् इस दृष्टिमें सर्व सत् पदार्थोंका संग्रह ज्ञात हो गया। इस सर्वसंग्रहका ज्ञान करनेवाले ज्ञानको परसंग्रहनय कहते हैं। इस संग्रहमें अनन्त परमार्थोंका संग्रह है, यह ज्ञान तो हुआ संग्रहनयसे, किन्तु जब तक एक अखण्ड सत् पर दृष्टि नही बनती तब तक केवलदृष्टि याने शुद्धनय न आसकनेसे मोक्षपथमें गति नहीं हो पाती, अतः आवश्यक है कि परसंग्रहको भेद करके आवान्तरसत् की ओर बढें। इसके लिये आगे कहा जानेवाला व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिक नय प्रयोक्ता होता है। उसमें पहिली बार भेद किया तो कुछ विभक्त होनेपर भी संग्रह ही बना रहा। ऐसा संग्रह जाननेवालेको अपरसंग्रह नय कहते हैं, यहाँ भी परमार्थ सतों का संग्रह ही रहा। ऐसे अनेक बार व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनयसे विभाग करते जानेपर भी जब तक अखण्ड एक सत् नहीं ज्ञात हो पाता है तब तक अनेकों अपरसंग्रह नय होते जाते हैं। इसका प्रथम प्रकार है। १– ४) परसंग्रहनयनामक द्रव्यार्थिक नय। द्वितीय प्रकार है २–(५) अपरसंग्रहनयनामक द्रव्यार्थिकनय इसमें अभेद द्रव्य, शुद्धपर्यायी द्रव्य, अशुद्ध-पर्यायी द्रव्यका ज्ञानाशय होनेसे इसके ३ भेद हो जाते हैं ३–(६) परमशुद्ध अपरसंग्रहनयनामक द्रव्यार्थिक नय ४–(७) शुद्ध अपरसंग्रहनयनामक द्रव्यार्थिक नय ५–(८) अशुद्ध अपरसंग्रहनयनामक द्रव्यार्थिक नय।

पाठ ५–द्रव्यार्थिक व्यवहार नय

संग्रहनयसे ग्रहण किये गये पदार्थोंके संग्रहका भेद करके भेदरूपसे ग्रहण करनेवाले ज्ञानको व्यवहारनय कहते हैं। यह व्यवहारनय अनेक अखण्ड सतोंके

संग्रहमें से अखण्डोंको अलग अलग जाननेके प्रयत्नमें चलता है। सो परसंग्रहका भेद करके कुछ अलग अलग जातियोंमें विभक्त कर जानना परसंग्रहभेदक व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय है। फिर उनमें भी भेद करके विभक्त सारूप्यमें पदार्थोंको जानता जाये तो वे सब अपरसंग्रहभेदक व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय कहलाते हैं। जैसे—पहिले "सत्" परसंग्रहको भेद करके छह जातियोंमें लाये—जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश व काल द्रव्य, तो यह परसंग्रहभेदक व्यवहारनयनामक द्रव्यर्थिकनय कहलाया। फिर उनमें से मानों "जीव द्रव्य" अपरसंग्रह का भेद किया—जीव दो प्रकारके हैं मुक्त व संसारी, सो यह अपरसंग्रहभेदक व्यवहारनय नामक द्रव्यार्थिकनय हुआ। अब आगे एक एक विभागका भेद करते जायें तो वे सब अपरसंग्रहभेदक व्यवहारनय होते जायेंगे। इस प्रकार जब तक एक अखण्ड सत् पर नहीं पहुँचते तब तक अपरसंग्रहभेदक व्यवहारनय प्रयोक्तव्य होते जाते हैं। इसका प्रथम प्रकार है— १-(९) परसंग्रहभेदक व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय। द्वितीय प्रकार है— २-(१०)अपरसंग्रहभेदकव्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय। तृतीय प्रकार है— ३-(११) अंतिम अपरसंग्रहभेदक व्यवहारनय। इनके ३ भेद आशयवश हो जाते हैं। ४-(१२) परम शुद्ध अपरसंग्रहभेदकव्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय, ५-(१३) शुद्ध अपर संग्रहभेदक व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय, ६-(१४) अशुद्ध अपरसंग्रहभेदक व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय।

पाठ ६—द्रव्यार्थिक अन्तिम व्यवहारनय

अपरसंग्रहका भेद कर-कर जब हम अखण्ड सत् तक पहुँच जाते हैं फिर इसका भेद नहीं किया जाता। अखण्ड एक सत् तक पहुचाने वाले इस व्यवहारनयको अन्तिम व्यवहारनय नामक द्रव्यार्थिकनय कहते है। यही निश्चयनय कहलाता है। निश्चयनय एक अखण्ड सत् को अर्थात् एक द्रव्यको जानता है सो अन्तिमव्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनयने भी अन्तिम अपरसंग्रह को भेद करके एक अखण्ड सत्का बोध कराया। अब इस एक सत्को जानते समय परमशुद्ध, शुद्ध अथवा अशुद्ध जिस विधिका मूड होगा उसी विधिमें इस सत्का ज्ञान होगा। इसको परमशुद्ध द्रव्यार्थिक, शुद्धद्रव्यार्थिक व अशुद्धद्रव्यार्थिक

कहिये या परम शुद्धनिश्चयनय, शुद्ध निश्चयनय व अशुद्धनिश्चयनय कहिये।

यह अन्तिम व्यवहारनय अर्थनय है व उसमें भी द्रव्यार्थिकनय है। इस कारण यह व्यवहारनय अध्यात्मशास्त्रोंमें प्रयुक्त होने वाले निश्चय व्यवहार वाले व्यवहारसे भिन्न है। निश्चय व्यवहारमें प्रयुक्त व्यवहार कथन करने वाला है और यह व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय अधिगम करने वाला है और वह भी द्रव्यार्थिक दृष्टिसे। इस अन्तिम व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय में परिपूर्ण अखण्ड एक सत् अन्य सबसे विभक्त करके बुद्धिमें स्थापित किया।

पाठ ७—अन्तिम व्यवहारनय नामक द्रव्यार्थिकनयके प्रकार

अन्तिम व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनयने अन्तिम अपरसंग्रहको विभक्त करके अखण्ड एक सत् का बोध कराया अब इस अखण्ड एक सत् को गुण, स्वभाव, शुद्ध पर्याय, अशुद्धपर्याय, अभेद आदि जिस जिसकी मुख्यता करके जिस-जिस रूपसे जाना जायगा उतने ही इसके प्रकार बन जावेंगे। जैसे १-(१५) परमशुद्ध अभेदविषयी अन्तिमलक्षित व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय, जैसे चिन्मात्र आत्मा। २-(१६) परमशुद्ध भेदविषयी अन्तिमलक्षित व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय, जैसे-ज्ञान दर्शन आदि गुण वाला आत्मा। ३-(१७) शुद्ध अभेद विषयी अन्तिमलक्षित व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय, जैसे-जीव केवलज्ञानी है। ४-(१८) शुद्ध भेदविषयी अन्तिमलक्षित व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय जैसे-मुक्त जीवके अनन्तज्ञान अनन्तदर्शन आदि। ५-(१९) अव्यक्त अशुद्ध अन्तिमलक्षित व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय, जैसे अबुद्धिगत क्रोध आदि वाला जीव ६-(२०) व्यक्त अशुद्ध अन्तिमलक्षित व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय, जैसे बुद्धिगत क्रोध आदि वाला जीव।

७-(२१) उपाधिनिरपेक्षशुद्ध द्रव्यार्थिकनय, जैसे-संसारी जीव सिद्धसमान शुद्धात्मा है। ८-(२२) उत्पादव्ययगौणसत्ताग्राहक शुद्ध द्रव्यार्थिक नय, जैसे-द्रव्य नित्य है। ९-(२३) भेदकल्पनानिरपेक्ष शुद्ध द्रव्यार्थिकनय, जैसे-निजगुण पर्याय स्वभावसे अभिन्न द्रव्य है। १०-(२४) उपाधिसापेक्ष अशुद्धद्रव्यार्थिकनय, जैसे—कर्मोदय विपाकके सान्निध्यमें जीव विकास विकल्परूप परिणमता है। ११-(२४A) उपाध्यभावापेक्ष शुद्धद्रव्यार्थिकनय, जैसे-कर्मोपाधिके अभावका

निमित्त पाकर आत्माकी शुद्ध परिणति होनेका ज्ञान १२-(२४B) शुद्धभावनापेक्ष शुद्ध-द्रव्यार्थिकनय, जैसे–आत्माके शुद्धपरिणामका निमित्त पाकर कर्मत्वका क्षय होनेका ज्ञान। १३-(२५) उत्पादव्ययसापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिकनय, जैसे–द्रव्य उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्त है। १४-(२६) भेदकल्पनासापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिकनय, जैसे आत्माके ज्ञान है, दर्शन है, चरित्र है आदि। १५-(२७) अन्वयद्रव्यार्थिकनय, जैसे–गुणपर्यायस्वभावी आत्मा है। १६ (२८) स्वद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिकनय, जैसे-आत्मा स्वचतुष्टयसे है। १७(२६ परद्रव्यादिग्राहकद्रव्यार्थिकनय, जैसे–आत्मा परचतुष्टयसे नहीं है। १८ (३०) परमभावग्राहक द्रव्यार्थिकनय जैसे आत्मा ज्ञानस्वरूप है।

इस प्रकार १८ रूपोंमें निश्चयनय आया, तो भी एकके सामने दूसरोंकी तुलना होनेपर उनमें जो अधिक अभेदवाला निश्चयनय है उसके सामने अन्य निश्चय व्यवहार कहलाते हैं।

पाठ ८–पर्यायार्थिक अर्थनय

पर्यायार्थिकनय ४ हैं–ऋजुसूत्रनय, शब्दनय, समभिरूढनय, एवंभूतनय। इनमें से सिर्फ ऋजुसूत्रनय अर्थनय है, शेष ३ नय शब्दनय हैं। जो वर्तमान-पर्यायको जाने उसे ऋजुसूत्रनय कहते हैं। यहाँ यह जान लेना अत्यावश्यक है कि पर्याय स्वतंत्र सत् नहीं है याने सत् नहीं है, किन्तु सत् पदार्थका परिणमन है। सत् के ये लक्षण हैं–१–उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत्, २–गुणपर्ययवद्द्रव्यम्, ३–अन्य सतोंसे प्रविभक्त (पृथक्) प्रदेशवाला, ४–साधारण व असाधारण गुणवाला, ५–द्रव्यव्यञ्जनपर्याय व गुणव्यञ्जनपर्यायवाला। इन लक्षणोंमें से एक भी लक्षण पर्यायमें नहीं है, अतः पर्याय सत् नहीं है। फिर यह प्रश्न हो सकता है कि जब पर्याय सत् नहीं है, तो उसका ज्ञान कैसे हो, सत् ही तो प्रमेय होता है। उत्तर–पर्यायका ज्ञान नहीं हुआ करता, किन्तु पर्यायमुखेन सत् द्रव्यका ज्ञान हुआ करता है। ऋजुसूत्रनय द्वारा पर्यायमुखेन द्रव्य सत् का ज्ञान होता है। हां, पर्यायकी मुख्यता दृष्टिमें है। जिनके मतमें पर्याय स्वतंत्र सत् है उसके मतमें पर्याय ही पूरा पदार्थ हो जाता है, फिर उसका अन्वय व

उपादान कुछ न रहनेसे सर्वथा क्षणिकवाद बन जाता है, जो जैनशासनसे विपरीत है, जिसका निराकरण प्रमेयकमलमार्तण्ड अष्टसहस्री आदि दार्शनिक ग्रन्थोंमें विस्तारपूर्वक है। सूक्ष्म ऋजुसूत्रनयका विषय एक समयकी पर्याय है। यह ज्ञान किसी व्यवहार या प्रयोग बनानेके लिये नहीं, इस ज्ञानमें तो व्यवहारका लोप होता है। यह तो विषयज्ञान कराने मात्रके लिये है। ऐसा स्पष्ट कथन सर्वार्थसिद्धि आदि ग्रन्थोंमें आचार्यदेवोंने किया है।

ऋजुसूत्रनयके प्रकार इस प्रकार हैं। १-(३१) अशुद्ध स्थूल ऋजुसूत्र.य-नामक पर्यायार्थिकनय, जैसे–नर नारक आदि पर्याय याने विभावद्रव्यव्यञ्जन-पर्यायोंका परिचय। २-(३२) शुद्ध स्थूल ऋजुसूत्रनय, जैसे चरमशरीरसे कुछ न्यून आकारवाला सिद्ध पर्याय याने स्वभावद्रव्यव्यञ्जनपर्यायोंका परिचय। ३-(३३) अशुद्ध सूक्ष्म ऋजुसूत्रनय, जैसे– क्रोध आदि विभावगुणव्यञ्जन पर्यायों का परिचय। ४-(३४) शुद्ध सूक्ष्म ऋजुसूत्रनय, जैसे-केवलज्ञान आदि स्वभावगुणव्यञ्जनपर्यायोंका परिचय। ५-(३५) अनादि नित्य पर्यायार्थिकनय जैसे–मेरु आदि नित्य हैं इत्यादि परिचय। ६-(३६) सादि नित्य पर्यायार्थिक-नय, जैसे–सिद्ध पर्याय नित्य है। अशुद्ध पर्याय हटकर सदा शुद्ध रहने वाले पर्यायोंका परिचय। ७-(३७) सत्तागौणोत्पादव्ययग्राहक नित्य अशुद्ध पर्यायार्थिकनय, जैसे प्रतिसमय पर्याय विनाशीक है आदि परिचय। ८-(३८) सत्तासापेक्ष नित्य अशुद्ध पर्यायार्थिकनय, जैसे-एक समयमें हुए त्रयात्मक पर्यायों का परिचय। ६-(३६) उपाधिनिरपेक्ष नित्य शुद्ध पर्यायार्थिकनय, जैसे–सिद्धपर्यायसदृश संसारियोंकी शुद्ध पर्यायें। १०-(४०) उपाधिसापेक्ष नित्य अशुद्ध पर्यायार्थिकनय, जैसे–संसारी जीवोंके उत्पत्ति और मरण है।

पाठ ६–शब्दनय

शब्दनयके ३ प्रकार है, १-(४१) शब्दनय, २-(४२) समभिरूढ़नय, ३-(४३) एवंभूतनय। ऋजुसूत्रनयनामक पर्यायार्थिकनयसे जो परिणमन ज्ञात हुआ है उसे उसके प्रायः पर्यायवाची सब शब्दोंमें से न कहकर जो शब्दार्थादि-विधिसे पूर्ण फिट बैठे उस शब्दसे ही कहना (समझना) शब्दनय है। जैसे दारा

भार्या कलत्र आदि शब्दोंसे भिन्न-भिन्न रूपमें वाच्यको ग्रहण करना। शब्द-नयसे उस शब्दके वाच्य अनेक अर्थोंमें से जिस अर्थमें उस शब्दकी रुढ़ि है उस अर्थको ही उस शब्दसे ग्रहण करना (समझना) समभिरूढनय है। जैसे-गो शब्दके वाच्य गाय, किरण, वाणी, आदि अनेक अर्थ हैं, किन्तु गो शब्दकी रूढि गायमें होनेसे गो शब्दसे गायको ही ग्रहण करना (समझना)। समभिरूढ-नयसे जो अर्थ समझा उसको भी सभी समयमें न कहकर (समझ कर) उस शब्दकी वाच्य अर्थक्रियासे परिणत जब वह अर्थ हो तब उस शब्दसे उसे कहना (समझना) एवंभूतनय है जैसे–पूजा करते समय ही उस व्यक्तिको पुजारी कहना आदि।

ये तीनों शब्दनय शब्दों द्वारा तर्क वितर्क कर पाण्डित्य दिखाते हैं। अतः इनका विषय समझ लेना पर्याप्त है। कहीं कहीं इनका उपयोग भी होता है वह किसी समस्याका समाधान भी करता है। हां अर्थनयोंका परिचय अधिक आवश्यक है और उन अर्थनयोंमेंसे भी अन्तिम व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय-का परिचय और भी अधिक आवश्यक है। क्योंकि सर्वनयोंमें से आत्माका परिचय पाकर सविधि परमशुद्धद्रव्यार्थिकनयके विषयको लक्ष्यमें लेकर नय प्रमाणसे अतिक्रान्त होकर आत्मानुभव होना सुगम होता है।

पाठ १०–निश्चयनय व व्यवहारनयके प्रसंगकी जिज्ञासा

अध्यात्मशास्त्रमें निश्चयनय, व्यवहार व उपचारका पद पदपर वर्णन मिलता है। सो यहाँ यह जिज्ञासा होना संभव है कि तत्त्वार्थसूत्रके प्रणेता पूज्यश्रीमदुमास्वामीने नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ, एवं-भूत ये सात नय कहे हैं। इनमें निश्चयनयका नाम ही नही है, अध्यात्म-शास्त्रमें प्रयुक्त व्यवहार सप्तनयमें प्रयुक्त व्यवहारनयसे भिन्न है, उपचारका भी सप्तनयमें संकेत नहीं है, फिर अध्यात्मशास्त्रमें प्रयुक्त निश्चय व्यवहार उपचारका मतलब क्या है? इसके समाधानका संकेत कुछ छटे पाठमें किया गया है फिर भी और स्पष्टीकरण आवश्यक है।

यदि कोई यह समाधान करनेकी चेष्टा करे कि नय दो प्रकारके होते

हैं एक आगमनय दूसरा अध्यात्मनय, तो यहाँ यह शंका हो जाती है कि क्या अध्यात्म आगमसे अलग विषय है। द्वादशाङ्गको आगम कहते हैं, क्या इस आगमसे बाहरी विषय है अध्यात्म। यदि आगमसे पृथक् है अध्यात्म, तो वह प्रमाणभूत कैसे रहेगा। अतः नयोंके विषयमें परस्पर भिन्न आगमनय व अध्यात्मनय ये दो प्रकार कहना आगमसम्मत नहीं। सो इस प्रकार निश्चय, व्यवहार व उपचारके प्रसंगकी जिज्ञासाका समाधान नहीं हो पाता। भले ही कहीं कहीं यह उल्लिखित है कि ये अध्यात्मभाषासे नय हैं, किन्तु उसका अर्थ यह है कि हैं तो सभी नय आगममें, किन्तु उन सब नयोंमें से इन कुछ नयोंका अध्यात्मग्रन्थोंमें अधिक प्रयोग होता है। इसी कारण इन्हें अध्यात्मनय कहने लगे हैं, सो यह जिज्ञासा खड़ी ही रही कि अध्यात्मशास्त्रोंमें निश्चय व्यवहार आदि का कहाँ समावेश है।

पाठ ११–निश्चयनय व व्यवहारनयके प्रसंगकी जिज्ञासाका समाधान

अध्यात्मशास्त्रमें नयादिक ४ प्रकारोंमें है–१–निश्चयनय, २-व्यवहारनय, ३-व्यवहार व ४-उपचार। अभेदविधिसे जाननेवाले नयको निश्चयनय कहते हैं। भेदविधिसे जाननेवाले नयको व्यवहारनय कहते हैं। निश्चयनय व व्यवहारनय से जाने गये विषयके कथनको व्यवहार कहते हैं। भिन्न भिन्न द्रव्योंका परस्पर एकका दूसरेको कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंधी व आधार आदि बतानेको उपचार कहते हैं। निश्चयनय तो ७ वें पाठमें बताये गये जो १६ प्रकारके अंतिम व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय हैं उनमें जो जो अभेद-विषयक नय हैं उनमें समाविष्ट हैं। और, व्यवहारनय भी उन १६ अंतिम-व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनयोंमें से जो जो भेदविषयक नय हैं उनमें समाविष्ट हैं। इनके अतिरिक्त ८ वें पाठमें उल्लिखित पर्यायार्थिक नयोंमें जो एक व अभेद विषयक नय हैं उनमें कुछ निश्चयनय समाविष्ट है और जो अनेक व भेदविषयक नय हैं उनमें व्यवहारनय समाविष्ट हैं। क्योंकि अभेद विधिसे ज्ञाता नयको निश्चयनय कहते हैं और भेदविधिसे ज्ञाता नयको व्यव-हारनय कहते हैं। सो जैसे द्रव्यार्थिकनय व पर्यायार्थिक नय प्रमाणके अंश होनेसे सत्य हैं ऐसे ही निश्चयनय व व्यवहारनय प्रमाणके अंश होनेसे सत्य

हैं। द्रव्यार्थिकनय वस्तुको द्रव्यकी प्रधानतासे जानता है, पर्यायार्थिकनय वस्तुको पर्यायकी प्रधानतासे जानता है, निश्चयनय वस्तुको अभेदविधिसे जानता है, व्यवहारनय वस्तुको भेदविधिसे जानता है। यहाँ यह जानना कि भेदविधिसे द्रव्य व पर्यायका ज्ञान कराने वाला यह व्यवहारनय व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनयोंमें यथोचित समाविष्ट होनेपर भी व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनयसे भिन्न लक्षणवाला है तथा यह व्यवहारनय व्यवहार और उपचारसे तो जुदा है ही।

पाठ १२—व्यवहार व उपचारके प्रसंग की जिज्ञासाका समाधान

द्रव्यार्थिकनय व पर्यायार्थिकनयसे, निश्चयनय व व्यवहारनयसे जाने गये विषयका निरूपण करना व्यवहार है। यह व्यवहार व्यवहारनय व व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय इन दोनोंके विषयका भी निरूपक है तो भी यह व्यवहार व्यवहारनयसे भिन्नलक्षणवाला है तथैव यह व्यवहार व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनयसे भी भिन्नलक्षणवाला है। उपचारसे व्यवहार तो भिन्न है ही, क्योंकि उपचार तो भिन्न भिन्न द्रव्योंमें परस्पर कारकपना या संबंध बताता है, और व्यवहार भिन्न भिन्न द्रव्योंमें परस्पर कारकपना य संबंध नहीं बताता, किन्तु एक द्रव्यकी व अनेक द्रव्योंकी घटनाका तथ्य बताता है। इसी कारण उपचार मिथ्या है, परन्तु व्यवहार मिथ्या नहीं। यहाँ दो बातें ज्ञातव्य हैं— १-व्यवहार शब्दका प्रयोग इन ४ स्थलोंमें आता है, व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय, व्यवहारनय, व्यवहार व उपचार सो वहाँ यह विवेक बनाना चाहिये कि यदि वह व्यवहार उपचारवाला है तो मिथ्या है और यदि द्रव्यार्थिकनयान्तर्गत व्यवहारनयवाला व्यवहार है तो मिथ्या नहीं, इसी तरह जो नयके विषयका प्रतिपादक व्यवहार है वह मिथ्या नहीं। २-उपचारमें भी जिस भाषामें वह बात उपस्थित करता है उसी रूपमें याने उपादान उपादेय रूपमें भिन्न द्रव्योंका परस्पर कारकत्व समझें तो वह समझ मिथ्या है और यदि उपचार कथनमें प्रयोजन और निमित्तको समझनेका ही मतलब रखें तो उस विवेकीने उपचार कथनमें से भी प्रयोजन निकाल लिया।

पाठ १३—निश्चयनयके प्रकार

अभेदविधिसे एक द्रव्यके बारेमें जानकारी होना सो निश्चयनय है (४४) यदि वह जानकारी अखंड परम स्वभावकी है तो अखंड परमशुद्ध निश्चयनय है—जैसे अखंड शाश्वत सहजचैतन्यस्वभावमात्र आत्माका परिचय। (४५) यदि वह जानकारी गुणकी है तो शक्तिबोधक परमशुद्धनिश्चयनय है, जैसे आत्मा सहज ज्ञान दर्शन शक्ति वीर्य वाला है। (४६) यदि वह जानकारी अभेदविधिसे शुद्ध पर्यायकी है तो वह शुद्धनिश्चयनय है। जैसे जीव केवलज्ञानी है आदि शुद्धपर्यायमय जीवका परिचय (४६A) यदि एक द्रव्यमें जानकारी भेदविधिसे शुद्ध पर्यायकी है तो वह सभेद शुद्धनिश्चयनय है जैसे- जीवके केवलज्ञान है, केवलदर्शन है, अनन्त सुख है आदि। (४७) यदि एक द्रव्यमें जानकारी अभेद विधिसे अशुद्धपर्यायकी है तो वह अशुद्धनिश्चयनय है, जैसे जीव रागी है आदि अशुद्ध पर्यायमय द्रव्यका परिचय। (४७A) यदि एकद्रव्यका परिचय भेदविधिसे अशुद्धपर्यायकी है तो वह सभेद अशुद्धनिश्चयनय है, जैसे जीवके क्रोध है, मान है, माया है आदि भेदसहित अशुद्धपर्यायमय द्रव्यका परिचय। सभेद परम शुद्धनिश्चयनय शाश्वत गुणको जनानेके लिये निश्चयनय है और गुणभेद करके जनानेकी दृष्टिसे व्यवहारनय है। इसी प्रकार सभेद शुद्धनिश्चयनय एक द्रव्यमें जानकारी देनेसे निश्चयनय है और भेदपूर्वक जानकारी देनेसे व्यवहारनय है। इसी प्रकार सभेद अशुद्ध निश्चयनय एक द्रव्यमें जानकारी देनेसे निश्चयनय है और भेदपूर्वक जानकारी देनेसे व्यवहारनय है। वस्तुतः अखंड परमशुद्धनिश्चय ही निश्चयनय है उसके समक्ष अन्य निश्चयनय व्यवहार है।

निर्गतः चयः यस्माद् स निश्चयः इस व्युत्पत्तिसे अर्थ हुआ कि जिसमें अन्य कुछ जोड़ा न जावे और निःशेषेण चयः निश्चयः इस व्युत्पत्तिसे अर्थ हुआ कि जिसमेंसे कुछ निकाला न जाये उसे परिपूर्ण ही रहने दिया जावे। इस प्रकार निश्चयका अर्थ हुआ कि जहाँ जोड़ और तोड़ न किया जावे वह निश्चयनय है। इस व्युत्पत्यर्थमें परमशुद्धनिश्चयनय सदा निश्चयनय है और जिन निश्चयनयोंने गुणको जाना, पर्यायको जाना वे उत्तरोत्तर अन्तर्दृष्टि होनेपर व्यवहार हो जाते हैं।

उक्त चारों निश्चयनयोंमें पहिले दो तो अन्तिम व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनयमें अन्तर्गत है। अन्तके दो निश्चयनय आशयवश उक्त द्रव्यार्थिकनयमें व पर्यायार्थिकनयमें अन्तर्गत हैं। इसका निर्देश अन्तिम पाठमें नयसूचीमें दिया जायेगा।

पाठ १४–शुद्धनय व विवक्षितैकदेश शुद्धनिश्चयनय

(४८) विवक्षितैकदेश शुद्ध निश्चयनयमें विवक्षित वस्तुको शुद्ध स्वरूपमें ही निरखा जाता है, वस्तुको विकारोंसे पृथक् निरखा जाता है। जो विकार होते हैं उन्हें चूंकि उपादान ही स्वयं निमित्त होकर नहीं प्रकट करता है, निमित्तके सान्निध्यमें ही प्रकट हो पाते हैं, अतः उन विकारोंको निमित्त-स्वामिक बताकर वस्तुको शुद्धस्वरूपमें ही दिखाना इस नयका काम है, जैसे जीवके विकारपरिणमनोंको पौद्गलिक जताना व विकारोंसे पृथक् जीवको निरखाना।

व्यवहारनयको गौणकर अर्थात भेदविधिसे जाननेका उपयोग न करके निश्चयनयको मुख्य कर मानें अभेदविधिसे जानते हुए परमशुद्ध निश्चयनय तक आये वहाँ भी स्वभावका एकका विकल्प रहा उससे भी अतिक्रान्त होकर स्वानुभवके निकट होते हैं तब संकल्पविकल्पको ध्वस्त करता हुआ शुद्धनय उदित होता है और उसके फलमें प्रमाणनयनिक्षेपके विकल्पसे अतिक्रान्त होकर स्वयं प्रमाणस्वरूप हो जाता है। यह ज्ञानस्थिति (४९) शुद्धनय है। शुद्धनयके प्रकार नहीं हैं, वह तो स्वयं शुद्धनय है। यहाँ तो नयविकल्पसे अतिक्रान्त अखण्ड अन्तस्तत्त्वका अभेद दर्शन है। (४९A) बहिस्तत्त्वके निषेध द्वारा शुद्ध तत्त्वका परिचय कराना प्रतिषेधक शुद्धनय है, जैसे जीव कर्मसे अबद्ध है आदि परिचय।

पाठ १५–व्यवहारनयके प्रकार

भेदविधिसे वस्तुके जाननेवाले नयको व्यवहारनय कहते हैं। विधिकी दृष्टिसे कई द्रव्यार्थिकनय व्यवहारनय हो जाते हैं और कई पर्यायार्थिकनय व्यवहारनय हो जाते हैं। कई निश्चयनय भी उससे अधिक अन्तर्दृष्टि होनेपर उसकी तुलनामें व्यवहारनय हो जाते हैं। सब ही प्रकारके व्यवहारनयोंके नाम इस प्रकार है—

(५०) परमशुद्ध भेदविषयी व्यवहारनय अथवा भेदकल्पनासापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिकनय, जैसे आत्माके ज्ञान है दर्शन चारित्र है आदि परिचय। (५१) शुद्ध भेदविषयी द्रव्यार्थिक या शुद्धसूक्ष्म ऋजुसूत्रनय, जैसे आत्माका केवलज्ञान, अनन्त आनन्द है आदि का परिचय (५२) अशुद्धपर्यायविषयी व्यवहारनय या अशुद्ध सूक्ष्म ऋजुसूत्रनय, जैसे जीवके क्रोध, है, मान है आदि। (५३) उपाधि-सापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिकनय, जैसे कर्मोदयविपाकके सान्निध्यमें जीवके विकाररूप परिणमनेका परिचय। (५४) उत्पादव्ययसापेक्ष अशुद्धद्रव्यार्थिक, जैसे द्रव्य उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्त है, यों त्रितययुक्त द्रव्यको निरखना (५५) अशुद्ध स्थूल ऋजुसूत्रनय, जैसे नर नारक, तिर्यंच, देव आदि विभावद्रव्यव्यञ्जन पर्याय निरखना। (५६) शुद्ध स्थूल ऋजुसूत्रनय, जैसे चरम शरीरसे किंचित् न्यून आकार वाला सिद्धपर्याय जानना। (५७) अनादि नित्यपर्यायार्थिकनय, जैसे मेरु आदि नित्य है आदि का परिचय। (५८) सादिनित्यपर्यायार्थिकनय, जैसे सिद्धपर्याय नित्य है आदि परिचय (५९) सत्तागौणोत्पादव्ययग्राहक नित्याशुद्ध-पर्यायार्थिकनय, जैसे प्रतिसमय पर्यायें विनाशीक हैं। (६०) सत्तासापेक्ष नित्याशुद्धपर्यायार्थिक नय, जैसे एक समयमें त्रयात्मक पर्यायें। (६१) उपाधि-सापेक्ष नित्याशुद्धपर्यायार्थिकनय, जैसे संसारी जीवोंके उत्पत्ति मरण हैं।

इसीप्रकार भेदविधि जहाँ पाई जावे वे सब व्यवहारनय हैं। यहाँ इस संदेहमें नहीं डोलना है कि ये ही अनेक नय निश्चयनयमें कहे गये हैं और ये ही यहाँ व्यवहारनयमें कहे गये हैं, क्योंकि आशयवश यह सब परिवर्तन हो जाता है। जब अभेदकी ओर आशय हो जाता है तो वह निश्चय हो जाता है और जब भेदकी ओर आशय हो जाता है तो वह व्यवहारनय हो जाता है। सभेद प्रयुक्त गुणपर्यायका परिचय एक द्रव्यमें अभेदके आशयमें निश्चयनय है, भेदके आशयमें व्यवहारनय है। ऐसी गुंजाइशें कई तो द्रव्यार्थिकनयोंमें हैं और कई पर्यायार्थिकनयोंमें हैं। इसका निर्देश अन्तिम पाठ नयसूचीमें हो जायगा।

आत्महितकी साधनामें भेदव्यवहारको तज कर अभेद अन्तस्तत्त्वका उपयोगी बनना होता है, अतः साधनाके प्रसंगमें व्यवहारनय मिथ्या हो जाता

है और पश्चात् शुद्धनयात्मक ज्ञानानुभूतिके प्रसंगमें निश्चयनय भी मिथ्या हो जाता है, किन्तु परिचयके प्रसंगमें न तो निश्चयनय मिथ्या है और न व्यवहार-नय मिथ्या है।

पाठ १६—व्यवहार

द्रव्यार्थिकनय व पर्यायार्थिकनयसे तथा उनके अन्तर्गत निश्चयनय व व्यवहारनयसे जाने गये विषयका कथन करना सो व्यवहार है याने तथ्यके कथनका नाम व्यवहार है इसका दूसरा नाम उपनय है। जितने भी नय हैं उनका कथन किया जाय तो उतने ही व्यवहार हो जाते हैं। अतः उन व्यवहारोंके नाम भी वे ही पड़ जाते हैं, उनके अन्तमें निरूपक व्यवहार इतना शब्द और जोड़ दिया जाता है। फिर भी कई नाम व्यवहारके ऐसे हैं जिनके शब्दोंसे ही कथनप्रकारके हेतुवोंका निर्देश हो जाता है। अतः कुछ व्यवहारोंके नाम दिये जाते हैं।

(६२) भूतनैगमप्रतिपादक व्यवहार, जैसे-भूतकालीन स्थितिको वर्तमान-कालमें जोड़नेके संकल्पका घटनासंबंधित प्रतिपादन। (६३) भाविनैगम-प्रतिपादक व्यवहार, जैसे-भविष्यत्कालीन स्थितिको वर्तमानमें जोड़नेके संकल्पका घटनासंबंधित प्रतिपादन। (६४) वर्तमाननैगमप्रतिपादक व्यवहार जैसे वर्तमान निष्पन्न अनिष्पन्नको निष्पन्नवत् संकल्पका प्रतिपादन। (६५) परसंग्रह द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार जैसे 'सत्' कहकर समस्त जीव पुद्गलादिक सतोंके संग्रहका प्रतिपादन करना। (६६) अपरसंग्रहद्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार, जैसे सत् को भेद कर कहे गये जीव व अजीवमें से जीव कहकर समस्त जीवोंके संग्रहका प्रतिपादन करना। (६६A) परमशुद्ध अपरसंग्रहद्रव्यार्थिकप्रतिपादक व्यवहार, जैसे 'ब्रह्म' कहकर सर्व जीवोंमें कारण समयसारका प्रतिपादन करना। (६६B) शुद्ध अपरसंग्रहद्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार, जैसे मुक्त जीव कहकर समस्त कर्ममुक्त सिद्ध भगवंतोंका प्रतिपादन करना। (६६C) अशुद्ध अपरसंग्रहद्रव्यार्थिकप्रतिपादक व्यवहार, जैसे संसारी जीव कहकर समस्त संसारी जीवोंका प्रतिपादन करना। (६७)

परसंग्रहभेदक व्यवहारनय द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार, जैसे सत् २ प्रकार के है जीव अजीव आदि यों परसंग्रहको भेदनेका प्रतिपादन। (६८) अपर-संग्रहभेदक व्यवहारनय द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार, जैसे जीव २ प्रकार के हैं मुक्त संसारी आदि यों अपरसंग्रहको भेदनेका प्रतिपादन। (६८A) अन्तिम अपरसंग्रहभेदक व्यवहारनय द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार, जैसे द्वयणुक स्कंध भेद कर एक-एक अणुका प्रतिपादन। (६८B) अन्तिम-अखण्डसूचक व्यवहारनय द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार, जैसे एक अणु, एक जीव आदि अखण्ड सत् का प्रतिपादन। (६९) अखण्ड परमशुद्ध सद्भूत व्यवहार, जैसे अनाद्यनन्त अहेतुक अखण्ड चैतन्यस्वभावमात्र आत्माका प्रतिपादन। (६९A) गुणगुणिनिरूपक परमशुद्धसद्भूतव्यवहार, जैसे आत्माका स्वरूप सहज चैतन्य है आदि प्रतिपादन। (७०) सगुण परमशुद्ध सद्भूत व्यवहार, जैसे आत्माके सहज अनादि अनन्त चतुष्टयका प्रतिपादन। (७०A) प्रतिषेधक शुद्धनय प्रतिपादक व्यवहार, जैसे जीव पुद्गकर्मका अकर्ता है आदि कथन। (७१) अभेद शुद्ध सद्भूत व्यवहार, जैसे शुद्ध पर्यायमय आत्माका प्रतिपादन। (७२) सभेद शुद्ध सद्भूत व्यवहार, जैसे आत्माके केवलज्ञान, केवलदर्शन आदि शुद्ध पर्यायवान आत्माका प्रतिपादन। (७३) कारककारकिभेदक सदभूत व्यवहार, जैसे आत्माको जानता है आदि एक ही पदार्थमें कर्ता कर्म आदि कारकोंका कथन। (७४) अनुपचरित अशुद्ध सद्भूत व्यवहार, जैसे श्रेणीगत मुनिके रागादिक विकारका प्रतिपादन। (७५) उपचरित अशुद्ध सद्भूत व्यवहार, जैसे जीवके व्यक्त क्रोध मान आदि अशुद्ध पर्यायोंका प्रतिपादन। (७६) उपाधिसापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार जैसे- पुद्गलकर्मविपाकका निमित्त पाकर हुये विकृत जीवका प्रतिपादन। (७७) उपचरित उपाधिसापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार, जैसे विषयभूत पदार्थमें उपयोग देनेपर हुये व्यक्त विकारका कथन। (७८) उपाधिनिरपेक्ष शुद्ध द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार, जैसे संसारी जीव सिद्धसदृश शुद्धात्मा हैं का प्रतिपादन। (७९) उत्पादव्ययगौणसत्ताग्राहक शुद्ध द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार, जैसे ध्रौव्यत्वकी मुख्यतासे द्रव्यके नित्यत्वका प्रतिपादन। (८०) भेदकल्पनानिरपेक्ष शुद्ध

द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार, जैसे निज गुण पर्याय से अभिन्न द्रव्य है आदि का प्रतिपादन। (८१) उत्पादव्ययसापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार, जैसे प्रत्येक द्रव्य ध्रुव होकर भी उत्पाद व्यय वाला है आदि कथन। (८२) भेदकल्पनासापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार, जैसे आत्माके ज्ञान, दर्शन, चरित्र आदि गुण हैं आदि कथन। (८३) अन्वय द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार, जैसे द्रव्य सदैव अपने गुण पर्यायोंमें व्यापक रहता है आदि कथन। (८४) स्वद्रव्यादिग्राहकद्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार, जैसे जीव स्वद्रव्यक्षेत्रकालभावसे है आदि कथन।(८५)परद्रव्यादिग्राहकद्रव्यार्थिकप्रतिपादक व्यवहार, जैसे जीव परद्रव्यक्षेत्रकालभावसे नहीं है आदि कथन। (८६) परमभावग्राहक द्रव्यार्थिकप्रतिपादक व्यवहार, जैसे आत्मा सहज ज्ञायक स्वभाव है आदि कथन। (८७) अशुद्ध स्थूल ऋजुसूत्र प्रतिपादक व्यवहार, जैसे नर, नारक, स्कंध आदि अशुद्ध द्रव्यव्यञ्जनपर्यायोंका कथन। (८८) शुद्ध स्थूल ऋजुसूत्रप्रतिपादक व्यवहार, जैसे सिद्ध पर्याय, एक अणु, धर्मास्तिकाय आदि शुद्ध द्रव्य व्यञ्जनपर्यायका कथन। (८९) अशुद्ध सूक्ष्म ऋजुसूत्र प्रतिपादक व्यवहार, जैसे क्रोध, मान आदि विभाव गुणव्यञ्जनपर्यायोंका कथन। (९०) शुद्ध सूक्ष्म ऋजुसूत्र प्रतिपादक व्यवहार, जैसे केवल ज्ञान, केवल दर्शन, आदि स्वभावगुणव्यञ्जन पर्यायोंका कथन। (९१) अनादिनित्यपर्यायार्थिक प्रतिपादक व्यवहार, जैसे मेरु अकृत्रिम चैत्यालय नित्य है आदि कथन। (९२) सादि नित्य पर्यायार्थिक प्रतिपादक व्यवहार, जैसे सिद्ध पर्याय नित्य है आदि शुद्ध होकर सदा रहने वाली पर्यायका कथन। (९३) सत्तागौणोत्पादव्ययग्राहक अशुद्धपर्यायार्थिक प्रतिपादक व्यवहार, जैसे-समय समयमें पर्याय विनश्वर है आदि कथन। (९४) सत्तासापेक्ष नित्य अशुद्ध पर्यायार्थिक प्रतिपादक व्यवहार, जैसे समय समयमें त्रयात्मक पर्यायें है आदि कथन। (९५) उपाधिनिरपेक्ष नित्य शुद्ध पर्यायार्थिक प्रतिपादक व्यवहार, जैसे संसारियोंकी सिद्ध पर्यायसदृश शुद्ध पर्यायोंका कथन। (९६) उपाधिसापेक्ष नित्य अशुद्ध पर्यायार्थिक प्रतिपादक व्यवहार, जैसे संसारी जीवोंके उत्पत्ति मरण है आदि कथन। (९७) स्वजात्यसद्भूत व्यवहार, जैसे परमाणु बहुप्रदेशी है, जीव रागी है आदि कथन। (९८) बिजात्यसद्भूत व्यवहार, जैसे मतिज्ञान मूर्त है, दृश्यमान मनुष्य, पशु जीव है आदि कथन। (९९) स्वजातिबिजात्यसद्भूत व्यवहार, जैसे ज्ञेय जीव अजीवमें

ज्ञान जाता है आदि कथन। (१००) शब्दनय पर्यायार्थिक प्रतिपादक व्यवहार, जैसे ऋजुसूत्रनयके विषयको लिंगादि व्याभिचार दूर करके योग्य शब्दसे कहना। (१०१) समभिरूढनयपर्यायार्थिक प्रतिपादकव्यवहार, जैसे शब्दनयसे निश्चित शब्दसे वाच्य अनेक पदार्थोंमें से एक रूढ पदार्थका कथन करना। (१०२) एवंभूतनयपर्यायार्थिकनय प्रतिपादकव्यवहार, जैसे समभिरूढनयसे निश्चित पदार्थको उसी क्रियासे परिणत होनेपर ही उस शब्दसे कहना।

पाठ १७–उपचार

भिन्न-भिन्न द्रव्य गुण पर्यायोंमें परस्पर एकमें एक दूसरेके द्रव्य गुण पर्यायोंका आरोप करना तथा कर्तापन, कर्मपन, करणपन, संप्रदानपन, अपादानपन, संबंध व आधार बताना उपचार है। उपचार जिस भाषामें कथन करता है उसके अनुसार स्वरूप या घटना नहीं है अतः उपचार मिथ्या है, फिर भी उपचारका वर्णन उपदेशमें इस कारण चलता है कि उस प्रसंगमें जो प्रयोजन है या निमित्त है उसका संक्षेपतः सुगमतया बोध हो जावे। इसकारण उपचार कुछ प्रयोजनवान है। उपचारके प्रकार इस प्रकार हैं—

(१०३) उपाधिज उपचरित स्वभाव व्यवहार, जैसे जीवके मूर्तत्व व अचेतनत्व का कथन। (१०४) उपाधिज उपचरित प्रतिफलन व्यवहार, जैसे क्रोधकर्मके विपाकके प्रतिफलनको क्रोध कर्म कहना। (१०५) स्वाभाविक उपचरित स्वभाव व्यवहार, जैसे प्रभु समस्त पर पदार्थोंके ज्ञाता है आदि कथन। (१०६) द्रव्ये द्रव्योपचारक (एकजातिद्रव्ये अन्यजातिद्रव्योपचारक) असद्भूत व्यवहार जैसे शरीरको जीव कहना। (१०६A) स्वजातिद्रव्ये स्वजातिद्रव्योपचारक असद्भूत व्यवहार, जैसे शरीर मिट्टी है आदि कथन। (१०७) एकजातिपर्याये अन्यजातिपर्यायोपचारक असद्भूत व्यवहार, जैसे अन्न ही प्राण हैं आदि कथन। (१०८) स्वजातिपर्याये स्वजातिपर्यायोपचारक असद्भूत व्यवहार, जैसे दर्पणमें हुये प्रतिबिम्बको दर्पण कहना। (१०९) एक जातिगुणे अन्यजातिगुणोपचारक असद्भूत व्यवहार, जैसे मदिरापानसे अभिभूत मतिज्ञानको मूर्त कहना। (११०) स्वजातिगुणे स्वजातिगुणो-

पचारक असद्भूत व्यवहार, जैसे ज्ञान ही श्रद्धान है, ज्ञान ही चारित्र है आदि कथन। (१११) एकजातिद्रव्ये अन्यजातिगुणोपचारक असद्भूत व्यवहार, जैसे जीव मूर्तिक है आदि कथन। (११२) स्वजातिद्रव्ये स्वजातिगुणोपचारक असद्भूत व्यवहार, जैसे परमाणुको ही रूप कहना। (११३) एकजातिद्रव्ये अन्यजातिपर्यायोपचारक असद्भूत व्यवहार, जैसे जीव भौतिक हैं आदि कथन। (११४) स्वजातिद्रव्ये स्वजातिपर्यायोपचारक असद्भूत व्यवहार, जैसे परमाणु बहुप्रदेशी है, आत्मा भी गुण है आदि कथन। (११५) एकजातिगुणे अन्यजातिद्रव्योपचारक असद्भूत व्यवहार, जैसे ज्ञान गुण ही सकल द्रव्य है आदि कथन। (११६) स्वजातिगुणे स्वजातिद्रव्योपचारक असद्भूत व्यवहार जैसे द्रव्यके रूपको ही द्रव्य कहना, रूप परमाणु आदि। (११७) एकजातिगुणे अन्यजातिपर्यायोपचारक असद्भूत व्यवहार, जैसे ज्ञान ही धन है आदि कथन। (११८) स्वजातिगुणे स्वजातिपर्यायोपचारक असद्भूत व्यवहार, जैसे ज्ञान पर्याय है आदि कथन। (११९) एकजातिपर्याये अन्यजातिद्रव्योपचारक असद्भूत व्यवहार, जैसे शरीरको ही जीव कहना। (१२०) स्वजातिपर्याये स्वजातिद्रव्योपचारक असद्भूत व्यवहार, जैसे पृथ्वी आदि पुद्गल स्कन्धको द्रव्य कह देना। (१२१) एकजातिपर्याये अन्यजातिगुणोपचारक असद्भूत व्यवहार। (१२२) स्वजातिपर्याये स्वजातिगुणोपचारक असद्भूत व्यवहार, जैसे अहिंसाको गुण व विशिष्ट रूपको देखकर उतम रूप वाला कहना। (१२३) संश्लिष्ट स्वजात्युपचरित असद्भूत व्यवहार, जैसे यह परमाणु इस स्कंधका है। (१२४) असंश्लिष्ट स्वजात्युपचरित असद्भूत व्यवहार, जैसे ये पुत्र स्त्री आदि इस जीवके हैं आदि कथन। (१२५) संश्लिष्ट विजात्युपचरित असद्भूत व्यवहार, जैसे यह शरीर इस जीव का है, आदि कथन। (१२६) असंश्लिष्ट विजात्युपचरित असद्भूत व्यवहार, जैसे यह धन वैभव मेरा है आदि कथन। (१२७) संश्लिष्ट स्वजातिविजात्युपचरित असद्भूत व्यवहार, जैसे यह आभूषणसज्जित कन्या मेरी है आदि कथन। (१२८) असंश्लिष्ट स्वजातिविजात्युपचरित असद्भूत व्यवहार, जैसे यह ग्राम नगर मेरा है आदि कथन। (१२९) परकर्तृत्व अनुपचरित असद्भूत

व्यवहार, जैसे पुद्गल कर्मने जीवको रागी कर दिया आदि कथन। (१२९A) परभोक्तृत्व असद्भूत व्यवहार, जैसे जीव पुद्गलकर्मको भोगता है आदि कथन। (१२९B) परकर्तृत्व उपचरित असद्भूत व्यवहार, जैसे जीव घट पट आदिका कर्ता है आदि कथन। (१३०) परकर्मत्व असद्भूत व्यवहार, जैसे जीवके द्वारा ये पुण्य पाप बनाये गये आदि कथन। (१३१) परकरणत्व असद्भूत व्यवहार, जैसे जीव कषाय भावके द्वारा पौद्गलिक कर्मोंको बनाता है आदि कथन। (१३२) परसंप्रदानत्व असद्भूत व्यवहार, जैसे पिताने पुत्रके लिये मकान बनाया आदि कथन। (१३३) परापादनत्व असद्भूत व्यवहार, जैसे जीवसे इतने कर्म भड़कर अलग हो गये आदि कथन। (१३४) पराधिकरणत्व असद्भूत व्यवहार, जैसे जीवमें कर्म ठसाठस भरे हुये है आदि कथन। (१३५) परस्वामित्व असद्भूत व्यवहार, जैसे मेरा यह धन वैभव शरीर आदि है का कथन। (१३६) स्वजातिकरणे स्वजातिकार्योपचारक व्यवहार, जैसे हिंसा आदिक दुःख ही है, आदि का प्रतिपादन। (१३७) एकजातिकारणे अन्यजातिकार्योपचारक व्यवहार, जैसे अन्न धन प्राण है आदि कथन। (१३८) स्वजातिकार्ये स्वजातिकारणोपचारक व्यवहार, जैसे श्रुत ज्ञान भी मतिज्ञान है आदि कथन। (१३९) एक जातिकार्ये अन्यजातिकारणोपचारक व्यवहार, जैसे घटाकारपरिणत ज्ञान घट है आदि कथन। (१४०) एकजात्यल्पे अन्यजातिपूर्णोपचारक व्यवहार, जैसे राज घरानेमें यह नौकर सर्वव्यापक है आदि कथन। (१४१) स्वजात्यल्पे स्वजातिपूर्णोपचारक व्यवहार, जैसे सम्यक् मतिज्ञान केवल ज्ञान है आदि कथन। (१४२) एक जात्याधारे अन्यजात्याधेयोपोचारक व्यवहार, जैसे मंचपर बैठकर विद्वान प्रवचन करें तो कहना कि इस मंचने बड़े प्रवचन किये। (१४३) स्वजात्याधारे स्वजात्याधेयोपचारक व्यवहार, जैसे इस गुरुके उदरमें हजारों शिष्य पड़े हैं। (१४४, एक जात्याधेये अन्यजात्याधारोपचारक व्यवहार जैसे डलियामें केला रखकर बेचने वालेको केला कहकर पुकारना। (१४५) स्वजात्याधेये स्वजात्याधारोपचारक व्यवहार जैसे मौजसे मां की गोदमें बैठे हुये बालकका नाम लेकर मांको पुकारना। (१४६, तद्वति तदुपचारक व्यवहार, जैसे लाठीवाले पुरुषको लाठी कहकर पुकारना।

(१४७) अतिसामीप्ये तत्त्वोपचारक व्यवहार, जैसे चरम (अन्तिम) भवसे पूर्व के मनुष्य भवको भी चरम कहना। (१४८) भाविनि भूतोपचारक व्यवहार, जैसे ८ वें गुणस्थानमें औपशमिक या क्षायिक भाव कहना। (१४९) तत्सदृश-कारणे तदुपचारक व्यवहार, जैसे कर्मोदयजनित विकार इस जीवके लिये शल्य है। (१५०) सदृशे एकत्वोपचारक व्यवहार, जैसे गेहूँ दानोंके ढेरको गेहूँ एक वचन कहकर कहना। (१५१) आश्रये आश्रयी-उपचारक व्यवहार जैसे राजा प्रजाके गुण दोषोंको उत्पन्न करता है, आदि कथन।

पाठ १७—निमित्तकारण व आश्रयभूत कारण का विवेक

निमित्तका सही प्रयोग करनेमें और नयदृष्टि परखनेमें जहाँ अनेक परिचय ज्ञातव्य हैं वहाँ कुछ प्रसंगोंमें निमित्त कारण व आश्रयभूत कारणका अन्तर भी ज्ञातव्य है। निमित्त कारण उसे कहते हैं जिसका नैमित्तिक कार्यके साथ अन्वय व्यतिरेक सम्बन्ध हो जैसे क्रोध प्रकृतिका विपाक (उदय या उदीरणा) होनेपर ही जीवमें क्रोध विकल्प होना, क्रोध प्रकृतिविपाक न होने-पर क्रोधविकल्प नहीं होना। यह अन्वयव्यतिरेक सम्बन्ध कर्मविपाकमें है अतः क्रोधप्रकृतिविपाक क्रोधमें निमित्त कारण है। तथा जिस व्यक्तिपर उपयोग देकर क्रोध प्रकट हो उसे आश्रयभूतकारण कहते हैं। आश्रयभूतकारणका विकारके साथ अन्वयव्यतिरेक सम्बन्ध नहीं, किन्तु उपयोग देकर कारण बनाया गया। अतः आश्रयभूतकारण आरोपित कारण है, उपचरित कारण है, निमित्तकारण नहीं।

यहाँ यह ज्ञातव्य है कि निमित्त उपादानमें कुछ परिणति नहीं करता, किन्तु ऐसा योग है कि निमित्त कारणके सान्निध्यमें ही विकार होता, निमित्त-कारणके अभावमें विकार नहीं हो सकता। आश्रयभूतकारण उपादानमें भी कुछ परिणति नहीं करता और आश्रयभूत विषयके न होनेपर विकार न हो और विषयभूत पदार्थके होनेपर ही विकार हो या विषयभूत पदार्थ के न होनेपर विकार हो ही हो ऐसा कुछ भी नियन्त्रण नहीं है। हाँ प्रकृतिके उदय होनेपर यह जीव यदि विषयभूत पदार्थपर उपयोग देता है तो विकार व्यक्त

होता है उपयोग न दे तो विकार व्यक्त नहीं होता, अव्यक्त होकर निकल जाता है।

विकारसे हटना व स्वभावमें लगना यह अनादिसे विषयप्रेमी इस जीवको कैसे बने ? जब तक विकारसे घृणा न हो तब तक विकारसे हटना संभव नहीं। विकारसे घृणा तब बनेगी जब यह ज्ञानमें आ जाय कि विकार असार है, अपवित्र है, परभाव है और ज्ञान तब बने जब विकार नैमित्तिक है, यह बात ज्ञात हो। विकार नैमित्तिक है यह ज्ञान तब बने जब निमित्तका नैमित्तिकसे अन्वयव्यतिरेक सम्बन्ध ज्ञात हो। इस तरह निमित्तका नैमित्तिक-का यथार्थ ज्ञान नैमित्तिक विकारसे हटनेके लिए प्रायोजनिक है।

यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि आश्रयभूत पदार्थ विकारका निमित्त नहीं है, किन्तु व्यक्त विकारके लिये आश्रयभूत होनेसे व्यवहारमें उसे निमित्त कह देते हैं। सो आश्रयभूतकारणको निमित्त बताकर, उदाहरणमें रख रखकर निमित्त-का सर्वथा खण्डन करना या तो अज्ञानमूलक है या पहिले आश्रयभूतको ही निमित्त समझकर उसका खंडन करते चले आये थे, सो अब वास्तविक निमित्तकी बात सामने आनेपर भी उसी हठको निभाना कपटमूलक है। निमित्त विकारका कर्ता नहीं, किन्तु निमित्तसान्निध्य बिना विकार होता नहीं। यों निमित्तकारण व आश्रयभूतकारणका विवेक होनेपर, नयदृष्टियोजना, व आत्महितके लिए प्रयोगविधि सही बन जाती है।

पाठ १८—व्यवहार का विवेक

व्यवहार शब्दका प्रयोग व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय, भेदविषयक व्यवहारनय, नयविषयप्रतिपादक व्यवहार व उपचार इन चार स्थलोंपर होता है। अतः जहाँ व्यवहार शब्द आवे वहाँ यह विवेक करना अत्यावश्यक है कि यह व्यवहार उन चारोंमें से कौनसा है। यदि यह विवेक न रखा जावे और उपचार वाले व्यवहारको मिथ्या कहा है सो उस ही नातेको सर्वत्र व्यवहारमें अपनाकर आदिके तीनों व्यवहारोंको मिथ्या कह दिया जाये तो सर्व आगम शास्त्र मिथ्या मानने पड़ेंगे। अतः व्यवहारका विवेक अत्यावश्यक है।

उक्त चारों व्यवहारोंका स्पष्टीकरण पाठ नं० ५, ६, ७, १०, ११, १२, १५, १६, १७, में किया है। उसे समझ लेनेसे नयदृष्टिका प्रयोग व आत्म-हितके लिये आत्मप्रयोग सही होगा। जैसे दूध गाय भैंस बकरीके दूधको कहते हैं और आकके पेड़से निकले सफेद रसको भी दूध कहते हैं, आकका दूध पीनेसे मरण हो जाता तो आकके दूधका उदाहरण देकर सर्वथा यह कहना कि दूध प्राणघातक है यह क्या युक्त है व ऐसी श्रद्धासे जीवन चलेगा क्या ! हाँ वहाँ जो विवेक करेगा कि आकका दूध घातक है गाय भैंस आदिका दूध घातक नहीं, बल्कि पोषक है वह अपना जीवनमें सही प्रयोग करेगा।

पाठ २०—स्वतन्त्र सत्त्व व अतद्भावका विवेक

वस्तु द्रव्यरूपसे, गुणरूपसे व पर्यायरूपसे ज्ञेय होता है। वहाँ द्रव्यका लक्षण अन्य है, गुणका लक्षण अन्य है, पर्यायका लक्षण अन्य है। गुणोंमें भी प्रत्येक गुणका लक्षण अन्य अन्य है। पर्यायोंमें भी प्रत्येक पर्यायका लक्षण अन्य अन्य है। इनका वर्णन करते हुए अपना कौशल बतानेके लिये यदि कोई यों कहने लगे कि प्रत्येक गुण स्वतन्त्र सत् है, प्रत्येक पर्याय स्वतन्त्र सत् है, गुण स्वतन्त्र सत् है पर्याय स्वतन्त्र सत् है, तो यह सब कथन स्याद्वादशासनसे बहिर्भूत है। पर्याय स्वतन्त्र सत् नहीं इसका संक्षिप्त निरूपण ८ वें पाठमें है। गुण स्वतन्त्र सत् नहीं इसका अब यहाँ विचार कीजिये।

जो स्वतन्त्र सत् याने सत् होता है उसके ये लक्षण हैं—१-उत्पादव्यय-ध्रौव्ययुक्त सत् २-गुणपर्यायवद्द्रव्यम्, ३-प्रविभक्तप्रदेशत्व, ४-साधारणगुण वाला, ५-असाधारणगुणवाला, ६-द्रव्यव्यंजनपर्यायवाला, ७-गुणव्यंजनपर्याय वाला। गुणमें ये सातों ही बातें नहीं पाई जाती हैं। गुण उत्पादव्यय वाला नहीं है, गुणमें गुण होते नहीं हैं, 'द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः', गुणोंके प्रदेश द्रव्य व पर्यायसे भिन्न नहीं है, क्योंकि गुण निर्गुण हैं। गुणोंका आकार नहीं होता। अतः सातों बातें ही गुणमें नहीं हैं।

गुण और पर्याय सद्भूतद्रव्यकी तारीफ है। इस तारीफको समझनेके लिये इनका लक्षण जानना होता है। सो लक्षणभेदसे गुण व पर्यायोंका विशिष्ट

परिचय होता है। यों द्रव्य, गुण, पर्यायमें, व परस्पर सब गुणोंमें, परस्पर सब पर्यायोंमें अतद्भाव है, किन्तु स्वतन्त्र स्वतन्त्र सत्त्व नहीं है। हाँ वस्तुको द्रव्य कहते हैं सो द्रव्यको स्वतन्त्र सत् कह सकते हैं। गुणोंको व पर्यायको स्वतन्त्र सत् कहना मीमांसकोंका सिद्धान्त है।

इस प्रकार द्रव्य गुण पर्यायके सम्बन्धमें सही जानकारी होनेपर नयोंका प्रयोग व आत्महितके लिये आत्मप्रयोग सही होता है।

पाठ २१—दृष्टि सूची

ज्ञाननय (नैगमनय द्रव्यार्थिक)

१. **भूतनैगमनय** (जैसे आज दीपावलिके दिन वर्धमान स्वामी मोक्ष गये आदि इस प्रकार वर्तमानमें भूतका प्रकाश)।

२. **भाविनैगमनय** (जैसे अर्हन्त तो सिद्ध ही हो चुके आदि इसप्रकार वर्तमान में भावीका प्रकाश)।

३. **वर्तमान नैगमनय** (जैसे भात पक रहा है, आदि, इसप्रकार निष्पन्न व अनिष्पन्नका वर्तमान में निष्पन्नवत् प्रकाश)

卐 संग्रहनय द्रव्यार्थिकनय 卐

४. **परसंग्रहनामक द्रव्यार्थिकनय** (जैसे-सत्, सत् में सबका संग्रह है, क्योंकि चेतन अचेतन सभी पदार्थ सत्स्वरूप हैं)

५. **अपरसंग्रहनयनामक द्रव्यार्थिकनय** (जैसे-जीव। जीवमें जीवों के सिवाय अन्यका संग्रह नहीं)

६. **परमशुद्धअपरसंग्रहनामक द्रव्यार्थिकनय** (जैसे-ब्रह्मस्वरूप आत्मा, जिसके एकान्तमें सांख्यादिसिद्धान्त हो जाते हैं)

७ **शुद्ध अपरसंग्रहनयनामक द्रव्यार्थिकनय** (जैसे-मुक्त जीव। इसमें अतीत अनागत वर्तमान सर्वतः सिद्धोंका संग्रह है)

८. **अशुद्ध अपरसंग्रहनयनामक द्रव्यार्थिकनय** (जैसे-संसारी जीव। इसमें त्रस स्थावर आदि सभी अशुद्धपर्यायवान, जीवोंका संग्रह है)

卐 अनन्तिम व्यवहारनय द्रव्यार्थिकनय 卐

९. परसंग्रहभेदक व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय (जैसे-द्रव्य ६ प्रकारके हैं जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश व काल)

१०. अपरसंग्रहभेदक व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय (जैसे-जीव दो प्रकारके हैं मुक्त व संसारी, इस प्रकार शुद्ध अशुद्धके भेद बिना भेदोंमें परिचय)

११. अंतिम अपरसंग्रहभेदकव्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय (जैसे-पृथक् पृथक् एक एक सत् व द्वयणुक स्कन्धमें एक अणुका परिचय)

१२. परमशुद्ध अपरसंग्रहभेदक द्रव्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय (जैसे चैतन्यात्मकत्वसे सम्बद्ध अनन्त आत्माओंका परिचय)

१३. शुद्ध अपरसंग्रहभेदक व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय (जैसे-मुक्त जीवोंका क्षेत्र काल गति लिङ्ग आदिसे परिचय)

१४. अशुद्ध अपरसंग्रहभेदक व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय (जैसे-संसारी जीवोंका त्रस स्थावर आदि विभागोंसे परिचय)

卐 अंतिम व्यवहारनय द्रव्यार्थिक 卐

१५. परमशुद्ध अभेदविषयी अंतिम व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिक (जैसे आत्मा चैतन्यस्वरूपमात्र है आदि)

१६. परमशुद्ध भेदविषयी अंतिम व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिक (आत्मामें ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि गुण हैं)

१७. शुद्ध अभेदविषयी अन्तिम व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय (जैसे भगवंत आत्मा केवलज्ञानी है आदि)

१८. शुद्धभेदविषयी अन्तिम व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय (जैसे भगवंत आत्मामें अनंतज्ञान, दर्शन आदि हैं)

१९. अव्यक्त अशुद्ध अंतिम व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिकनय (जैसे-उपशम या क्षपक श्रेणिमें अपूर्वकरणमें आया हुआ मुनि)

२०. व्यक्त अशुद्ध अंतिम व्यवहारनयनामक द्रव्यार्थिक (जैसे किसी व्यक्तिपर क्रोध करनेवाला कोई एक मनुष्य निरखना)

२१. उपाधिनिरपेक्ष शुद्ध द्रव्यार्थिकनय (जैसे-संसारी जीव सिद्ध समान शुद्धात्मा हैं आदि, उपाधिका सम्बन्ध न तक कर स्वभावमात्र निरखना)

२२. उत्पादव्ययगौणसत्ताग्राहक शुद्धद्रव्यार्थिकनय (जैसे द्रव्य नित्य है, आदि, ध्रौव्यकी मुख्यतासे वस्तुका निरखना)

२३. भेदकल्पनानिरपेक्ष शुद्ध द्रव्यार्थिकनय (जैसे-निजगुणपर्यायसे अभिन्न द्रव्य है, यों शुद्ध स्वरूप निरखना)

२४. उपाधिसापेक्ष अशुद्धद्रव्यार्थिकनय (जैसे-कर्मोदयविपाकके सान्निध्य-में जीव विकाररूप परिणमता है, आदि परिचय)

२४A. उपाध्यभावापेक्ष शुद्धद्रव्यार्थिकनय (जैसे-कर्मोपाधिके अभावका निमित्त पाकर आत्माकी शुद्धपरिणति होती है आदि परिचय)

२४B. शुद्धभावनापेक्ष शुद्धद्रव्यार्थिकनय (जैसे-आत्माके शुद्धपरिणामका निमित्त पा कर कर्मत्वका दूर होना निरखना)

२५. उत्पादव्ययसापेक्ष अशुद्धद्रव्यार्थिकनय (जैसे-द्रव्य उत्पादव्ययध्रौव्य-युक्त है, यों त्रिलक्षणासत्तामय द्रव्य निरखना)

२६. भेदकल्पनासापेक्ष अशुद्धद्रव्यार्थिकनय (जैसे-आत्माके ज्ञान है दर्शन है, चारित्र है आदि परिचय)

२७. अन्वय द्रव्यार्थिकनय (जैसे-त्रैकालिक गुणपर्यायस्वभावी आत्मा, आदि मूलवस्तु निरखना)

२८. स्वद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिकनय (जैसे-स्वद्रव्यक्षेत्रकालभावसे वस्तुके अस्तित्व का परिचय)

२९. परद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिकनय (जैसे-परद्रव्यक्षेत्रकालभावसे वस्तुके नास्तित्व का परिचय)

३०. परमभावग्राहक द्रव्यार्थिकनय (जैसे-सहज अखण्ड ज्ञानस्वरूप आत्माका परिचय)

३०A. शुद्धपारिणामिकपरमभावग्राहक शुद्धद्रव्यार्थिकनय (जैसे-बद्धाब-

द्धादिनयविकल्परूप जीव नहीं होता आदि परिचय)

卐 अर्थनय पर्यायार्थिक 卐

३१. **अशुद्धस्थूल ऋजुसूत्रनयनामक पर्यायार्थिकनय** (जैसे-नर नारक आदि विभाव द्रव्यव्यञ्जन पर्यायोंका परिचय)

३२. **शुद्धस्थूल ऋजुसूत्रनयनामक पर्यायार्थिकनय** (जैसे-सिद्धपर्याय आदिक स्वभावद्रव्यव्यञ्जनपर्यायोंका परिचय)

३३. **अशुद्धसूक्ष्म ऋजुसूत्रनयनामक पर्यायार्थिकनय** (जैसे-क्रोध आदि विभावगुणव्यञ्जनपर्यायोंका परिचय)

३४. **शुद्धसूक्ष्म ऋजुसूत्रनयनामक पर्यायार्थिकनय** (जैसे-केवलज्ञान आदि स्वभावगुणव्यञ्जपर्यायोंका परिचय)

३५. **अनादिनित्य पर्यायार्थिकनय** (जैसे-मेरु नित्य है आदि, प्रतिसमय आय व्यय होते हुए वैसे ही बने रहनेवाले पदार्थका परिचय)

३६. **सादिनित्य पर्यायार्थिकनय** (जैसे-सिद्ध पर्याय आदि, अशुद्धता हटकर सादिशुद्ध रहनेवाले पर्यायोंका परिचय)

३७. **सत्तागौणोत्पादव्ययग्राहक नित्यअशुद्धपर्यायार्थिकनय** जैसे-प्रति-समय पर्याय विनाशीक है आदि परिचय)

३८. **सत्तासापेक्षनित्य अशुद्धपर्यायार्थिकनय** (जैसे-एक समयमें हुए त्रयात्मक पर्यायोंका परिचय)

३९. **उपाधि निरपेक्ष नित्य शुद्धपर्यायार्थिकनय** (जैसे-सिद्धपर्यायसदृश संसारी जीवोंकी शुद्धपर्यायें)

४०, **उपाधि सापेक्ष नित्य अशुद्धपर्यायार्थिकनय** (जैसे-संसारी जीवोंके उत्पाद और मरण है।

卐 शब्दनय पर्यायार्थिकनय 卐

४१. **शब्दनय** (ऋजुसूत्रनयके विषयको लिङ्गवचनादि व्यभिचार हटाकर किसी उपयुक्त शब्दसे कहना)

४२. **समभिरूढनय** (शब्दनय द्वारा नियत शब्दसे वाच्य अनेक अर्थोंमें से किसी एक रूढ अर्थको ही कहना)

४३. **एवंभूतनय** (समभिरूढनयके विषयको उस क्रियासे परिणत होते हुएके समय ही उसी शब्दसे कहना)

卐 निश्चयनय 卐

४४. **अखण्ड परमशुद्धनिश्चयनय** (जैसे-अखण्ड शाश्वत सहज चैतन्य-स्वभावमात्र आत्माका परिचय)

४५. **शक्तिबोधक परमशुद्धनिश्चयनय** (जैसे-आत्मा सहज ज्ञान दर्शन शक्ति वीर्यवान है।

४६. **शुद्धनिश्चयनय** (जैसे-जीव केवलज्ञानी है, आदि शुद्धपर्यायात्मक द्रव्यका परिचय)

४६A. **सभेद शुद्धनिश्चयनय** (जैसे-जीवके केवलज्ञान है, केवलदर्शन है, अनन्तसुख है आदि)

४६B. **अपूर्णशुद्धनिश्चयनय** (जैसे-स्वपरभेदविज्ञानीके एकत्वविभक्त आत्माकी ख्याति होनेसे ज्ञानमय भाव है)

४७. **अशुद्ध निश्चयनय** (जैसे-जीव रागी है आदि अशुद्धपर्यायमय द्रव्य का परिचय)

४७A. **सभेद अशुद्धनिश्चयनय** (जैसे-जीवके क्रोध है, मान है, माया है, लोभ है आदि भेदसहित अशुद्धका परिचय)

४८. **विवक्षितैकदेशशुद्धनिश्चयनय** (जैसे-रागादिक पौगद्‌लिक हैं, यों औपाधिक भावोंको उपाधिके सौंपकर शुद्धस्वभाव निरखना)

४९. **शुद्धनय** (जैसे-नयविकल्पसे अतिक्रान्त अखण्ड अन्तस्तत्त्वका अभेद दर्शन)

४९A. **प्रतिषेधक शुद्धनय** (जैसे-जीव पुद्गलकर्मका गात्रादिका अकर्ता है आदि परिचय)

४९B. **उपादानदृष्टि** (जैसे जीवके परिणमन, धर्म, गुण, ककण आदि कारकों को उसी जीवमें निरखना)

卐 व्यवहार नय 卐

५०. **परमशुद्ध भेदविषयी व्यवहारनय या भेदकल्पनासापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिकनय** (जैसे-आत्माके ज्ञान है, दर्शन है आदि का परिचय)

५१. **शुद्धभेदविषयी द्रव्यार्थिकनय या शुद्धसूक्ष्म ऋजुसूत्रनय** (जैसे-आत्माका केवलज्ञान, अनन्त आनन्द आदिका परिचय)

५२. **अशुद्धपर्यायविषयी व्यवहारनय या अशुद्धसूक्ष्म ऋजुसूत्रनय** (जैसे जीवके क्रोध, मान आदिका परिचय)

५३. **उपाधिसापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिकनय** (जैसे-कर्मोदयविपाकके सान्निध्य-में जीव विकाररूप परिणमता है)

५३ A. **निमित्तदृष्टि** (जैसे चक्रके आधारपर दंड द्वारा भ्रमण होकर जल-मिश्रण दशामें कुम्हारके हस्तव्यापारके निमित्तसे मिट्टीका घड़ा बनना आदि परिचय)

५४. **उत्पादव्ययसापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिकनय** (जैसे-द्रव्य उत्पादव्यय-ध्रौव्ययुक्त है, यों त्रितययुक्त द्रव्यको निरखना)

५५. **अशुद्धस्थूल ऋजुसूत्रनय** (जैसे-नर नारक, तिर्यंच, देव, आदि विभावद्रव्यव्यञ्जन पर्यायें निरखना)

५६. **शुद्ध स्थूल ऋजुसूत्रनय** (जैसे-चरमदेहसे न्यून आकारवाली सिद्धपर्याय, स्वभाव द्रव्यव्यञ्जन पर्याय निरखना)

५७. **अनादिनित्य पर्यायार्थिकनय** (जैसे-मेरु नित्य है आदि प्रतिसमय बनना विगड़ना होनेपर भी बना रहना निरखना)

५८. **सादिनित्य पर्यायार्थिकनय** (जैसे-सिद्धपर्याय नित्य है, आदि, उपाधिके अभावसे सदा रहनेवाली पर्यायका परिचय)

५९. **सत्तागौणोत्पादव्ययग्राहक नित्याशुद्ध पर्यायार्थिकनय** (जैसे-प्रतिसमय पर्याय बिनाशीक है, क्षणिक पर्यायका परिचय)

६०. **सत्तासापेक्ष नित्याशुद्धपर्यायार्थिकनय** (जैसे-एक समयमें त्रयात्मक पर्यायें, उत्पादव्ययध्रौव्य या भूतमाविवर्तमानपर्यायका परिचय)

६१. **उपाधिसापेक्ष नित्याशुद्धपर्यायार्थिकनय** (जैसे-संसारी जीवोंके उत्पत्तिमरण हैं, विषय कषाय हैं का परिचय)

卐 व्यवहार (यथार्थ प्रतिपादक व्यवहार) 卐

६२. **भूतनैगम प्रतिपादक व्यवहार** (भूतकालीन स्थितिको वर्तमानमें

जोड़नेके संकल्पका घटनासंबंधित प्रतिपादन)

६३. **भाविनैगमप्रतिपादक व्यवहार** (भविष्यत्कालीन स्थितिको वर्तमानमें जोड़नेके संकल्पका घटनासंबंधित प्रतिपादन)

६४. **वर्तमाननैगमप्रतिपादक व्यवहार** (वर्तमान निष्पन्न अनिष्पन्नको निष्पन्नवत् संकल्पका प्रतिपादन)

६५. **परसंग्रह द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार** (जैसे-'सत्' कहकर समस्त जीवपुद्गलादिक सतोंके संग्रहका प्रतिपादन करना)

६६. **अपरसंग्रह द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार** (जैसे-सत्को भेद किये गये जीव व अजीवमें से जीव कहकर समस्त जीवोंके संग्रहका प्रतिपादन)

६६ A. **परमशुद्ध अपरसंग्रह द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार** (जैसे-'ब्रह्म' कहकर सर्व जीवोंमें कारणसमयसारका प्रतिपादन करना)

६६ B. **शुद्ध अपरसंग्रह द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार** जैसे-मुक्तजीव कहकर समस्त कर्ममुक्त सिद्ध भगवंतोंका प्रतिपादन करना)

६६ C. **अशुद्ध अपरसंग्रह द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार** (जैसे संसारी जीव कहकर समस्त संसारी जीवोंका प्रतिपादन करना)

६७. **परसंग्रहभेदकव्यवहारनय द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार** (जैसे सत् २ प्रकारके हैं जीव अजीव, आदि, यों परसंग्रहको भेदनेका प्रतिपादन)

६८. **अपरसंग्रहभेदकव्यवहारनय द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार** (जैसे जीव २ प्रकारके मुक्त संसारी आदि यों अपरसंग्रहको भेदनेका प्रतिपादन)

६८ A **अंतिम-अपरसंग्रहभेदकव्यवहारनय द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार** (जैसे द्वयणुक स्कंधके भेद कर एक अणुका प्रतिपादन)

६८ B. **अंतिम अखण्ड व्यवहारनयद्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार** (जैसे एक अणु, एक जीव, आदि अखण्ड सत्का प्रतिपादन)

६९. **अखण्ड परमशुद्ध सद्भूतव्यवहार** (जैसे अनाद्यनन्त अहेतुक अखण्ड चैतन्यस्वभावमात्र आत्माका प्रतिपादन)

६९ A. **गुणगुणिभेदक परमशुद्ध सद्भूत व्यवहार** (जैसे आत्माका स्वरूप सहज चैतन्यस्वरूप है)

७०. **सगुण परमशुद्धसद्भूत व्यवहार** (जैसे आत्माके सहज ज्ञानादि अनन्तचतुष्टय का प्रतिपादन)

७०A. **प्रतिषेधकशुद्धनयप्रतिपादक व्यवहार** (जैसे जीव पुग्द्‌लकर्मका अकर्ता है आदि कथन)

७१. **अभेद शुद्ध सद्भूत व्यवहार** (जैसे शुद्धपर्यायमय आत्माका प्रतिपादन)

७२. **सभेद शुद्धसद्भूतव्यवहार** (जैसे आत्माके केवलज्ञान, केवलदर्शन, आदि शुद्धपर्यायवान आत्माका प्रतिपादन)

७३. **कारककारकिभेदक सद्भूतव्यवहार** (जैसे आत्मा आत्माको जानता है, आदि एक ही पदार्थमें कर्ताकर्म आदिका कथन)

७३A. **कारकारकिभेदक अशुद्धसद्भूत व्यवहार** (जैसे जीवविभावोंका कर्ता जीव है आदि कथन)

७४. **अनुपचरित अशुद्धसद्भूत व्यवहार** (जैसे श्रेणिगत मुनिके रागादि-विकारका प्रतिपादन)

७ **उपचरित अशुद्धसद्भूतव्यवहार** (जैसे जीवके व्यक्त क्रोध आदि व्यक्त अशुद्ध पर्यायोंका प्रतिपादन)

७६. **उपाधिसापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिकप्रतिपादक व्यवहार** (जैसे पुद्गल-कर्म विपाकका निमित्त पाकर हुए विकृत जीवका प्रतिपादन)

७७. **उपचरित उपाधिसापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिकप्रतिपादक व्यवहार** (जैसे विषयभूत पदार्थमें उपयोग देनेपर हुए व्यक्त विकारका कथन)

७८. **उपाधिनिरपेक्ष शुद्धद्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार** (जैसे संसारी जीव सिद्ध सदृश शुद्धात्मा हैं का प्रतिपादन)

७९. **उत्पादव्ययगौणसत्ताग्राहक शुद्धद्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार** (जैसे ध्रौव्यत्पकी मुख्यतामें द्रव्यके नित्यत्वका प्रतिपादन)

८०. **भेदकल्पनानिरपेक्ष शुद्धद्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार** (जैसे निजगुणपर्यायसे अभिन्न द्रव्य है, आदिका प्रतिपादन)

८१. **उत्पादव्ययसापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार** (प्रत्येक

द्रव्य ध्रुवहोकर भी उत्पाद व्ययवाला है आदि कथन)

८२. **भेदकल्पनासापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार** (आत्मा-के ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि गुण हैं आदि कथन)

८३. **अन्वयद्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार** (द्रव्य सदैव अपने गुणपर्यायोंमें व्यापक रहता है आदि कथन)

८४. **स्वद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार** (जैसे जीव स्वद्रव्यक्षेत्रकालभावसे है आदि कथन)

८५. **परद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिक प्रतिपादक व्यवहार** (जैसे जीव परद्रव्यक्षेत्रकालभावसे नहीं है आदि कथन)

८६. **परमभावग्राहक द्रव्यार्थिकप्रतिपादक व्यवहार** (आत्मा सहज ज्ञायकस्वभाव है आदि कथन)

८७. **अशुद्धस्थूल ऋजुसूत्र प्रतिपादक व्यवहार** (जैसे नर "नारक" स्कंध आदि अशुद्ध द्रव्यव्यञ्जन पर्यायोंका कथन)

८८. **शुद्धस्थूल सूक्ष्म ऋजुसूत्र प्रतिपादक व्यवहार** (जैसे सिद्धपर्याय, एक अणु, धर्मास्तिकाय आदि शुद्धद्रव्यव्यञ्जनपर्यायका कथन)

८९. **अशुद्धसूक्ष्म ऋजुसूत्र प्रतिपादक व्यवहार** (जैसे क्रोध, मान आदि विभाव गुणव्यञ्जन पर्यायोंका कथन)

९०. **शुद्ध सूक्ष्म ऋजुसूत्र प्रतिपादक व्यवहार** (जैसे केवलज्ञान, केवल-दर्शन आदि स्वभावगुणव्यञ्जनपर्यायोंका कथन)

९१. **अनादिनित्यपर्यायार्थिक प्रतिपादक व्यवहार** (मेरु, अकृत्रिम चैत्यालय नित्य हैं आदि कथन)

९२. **सादिनित्यपर्यायार्थिक प्रतिपादक व्यवहार** (जैसे सिद्धपर्याय नित्य है आदि शुद्ध होकर सदा रहनेवाली पर्यायका कथन)

९३. **सत्तागौणोत्पादव्ययग्राहक अशुद्धपर्यायार्थिक प्रतिपादक व्यवहार** (जैसे समय समयमें पर्याय विनश्वर है आदि कथन)

९४. **सत्तासापेक्ष नित्य अशुद्धपर्यायार्थिक प्रतिपादक व्यवहार** (जैसे समय समयमें त्रयात्मक पर्यायें है आदि कथन)

९५. उपाधिसापेक्ष नित्य अशुद्धपर्यायार्थिक प्रतिपादक व्यवहार (जैसे संसारियोंकी सिद्धपर्यायसदृश शुद्धपर्यायोंका कथन)

९६ उपाधिसापेक्ष नित्य अशुद्धपर्यायार्थिक प्रतिपादक व्यवहार (जैसे संसारी जीवोंके उत्पत्ति मरण हैं आदि कथन)

९७. स्वजात्यसद्‌भूत व्यवहार (जैसे परमाणु बहुप्रदेशी है, जीव रागी हैं आदि कथन)

९८. विजात्यसद्‌भूत व्यवहार (जैसे मतिज्ञान मूर्त है, दृश्यमान मनुष्य, पशु जीव हैं आदि कथन)

९९. स्वजातिविजात्यसद्‌भूत व्यवहार (जैसे ज्ञेय जीव अजीवमें ज्ञान जाता है आदि कथन)

१००. शब्दनयपर्यायार्थिक प्रतिपादक व्यवहार (ऋजुसूत्रनयके विषयको लिंगादिव्यभिचार दूर करके योग्यशब्दसे कहना)

१०१. समभिरुढनयपर्यायार्थिकप्रतिपादक व्यवहार (शब्दनयसे निश्चित शब्दसे वाच्य अनेक पदार्थोंमेंसे एक रूढपदार्थका कथन)

१०२. एवंभूतनयपर्यायार्थिक प्रतिपादक व्यवहार (समभिरूढसे निश्चित पदार्थको उसी क्रियासे परिणत होनेपर ही कहना)

卐 उपचार (आरोपक व्यवहार) 卐

१०३. उपाधिज उपचरितस्वभावव्यवहार (जैसे जीवके मूर्तत्व व अचेतनत्वका कथन)

१०४. उपाधिज उपचरित प्रतिफलनव्यवहार (जैसे क्रोधकर्मके विपाकके प्रतिफलनको क्रोधकर्म कहना)

१०५. स्वाभाविक उपचरितस्वभावव्यवहार (जैसे प्रभु समस्त पर पदार्थोंके भी ज्ञाता है आदि कथन)

१०५A. अपरिपूर्ण उपचरित स्वभावव्यवहार (जैसे जीव घट पट आदि पर पदार्थका ज्ञाता है आदि कथन)

१०६. द्रव्ये द्रव्योपचारक (एकजातिद्रव्ये अन्यजातिद्रव्योपचारक) असद्‌भूतव्यवहार (जैसे शरीर को जीव कहना)

१०६A. स्वजातिद्रव्ये स्वजातिद्रव्योपचारक असद्‌भूतव्यवहार (जैसे शरीर मिट्टी है आदि कथन)

१०७. एकजातिपर्याये अन्यजातिपर्यायोपचारक असद्‌भूत व्यवहार (जैसे अन्न ही प्राण है आदि कथन)

१०८. स्वजातिपर्याये स्वजातिपर्यायोपचारक असद्भूत व्यवहार (जैसे दर्पणमें हुए प्रतिविम्बको दर्पण कहना)

१०९. एकजातिगुणे अन्यजातिगुणोपचारक असद्भूत व्यवहार (मदिरापानसे अभिभूत मतिज्ञानको मूर्त कहना)

११०. स्वजातिगुणे स्वजातिगुणोपचारक असद्भूत व्यवहार (ज्ञान ही श्रद्धान है, ज्ञान ही चरित्र है आदि कथन)

१११. एकजातिद्रव्ये अन्यजातिगुणोपचारक असद्भूत व्यवहार (जीव मूर्तिक है आदि कथन)

११२. स्वजातिद्रव्ये स्वजातिगुणोपचारक असद्भूत व्यवहार (जैसे परमाणुको ही रूप कहना)

११३. एकजातिद्रव्ये अन्यजातिपर्यायोपचारक असद्भूत व्यवहार (जैसे जीव भौतिक है आदि कथन)

११४. स्वजातिद्रव्ये स्वजातिपर्यायोपचारक असद्भूत व्यवहार (जैसे परमाणु वहुप्रदेशी है, आत्मा श्रुतज्ञान है आदि कथन)

११५. एकजातिगुणे अन्यजातिद्रव्योपचारक असद्भूत व्यवहार (जैसे ज्ञान गुण ही सकल द्रव्य है आदि कथन)

११६. स्वजातिगुणे स्वजातिद्रव्योपचारक असद्भूत व्यवहार (जैसे द्रव्यके रूपको ही द्रव्य कहना, रूपपरमाणु आदि)

११७. एकजातिगुणे अन्यजातिपर्यायोपचारक असद्भूत व्यवहार (जैसे ज्ञान ही धन है आदि कथन)

११८. स्वजातिगुणे स्वजातिपर्यायोपचारक असद्भूत व्यवहार (जैसे ज्ञान पर्याय है आदि कथन)

११९. एकजातिपर्याये अन्यजातिपर्यायोपचारक असद्भूत व्यवहार

(जैसे घटाकार परिणत ज्ञानको घट कहना)

१२०. स्वजातिपर्याये स्वजातिद्रव्योपचारक असद्भूत व्यवहार (जैसे पृथ्वी आदि पुद्गलस्कंधको द्रव्य कह देना)

१२१. एकजातिपर्याये अन्यजातिद्रव्योपचारक असद्भूत व्यवहार (जैसे पशु-पक्षी आदि के शरीर को देखकर यह जीव है आदि कथन)

१२२. स्वजातिपर्याये स्वजातिगुणोपचारक असद्भूत व्यवहार (जैसे अहिंसाको गुण व देह के विशिष्ट रूपको देखकर रूपवाला कहना)

१२३. संश्लिष्ट स्वजात्युपचरित असद्भूत व्यवहार (जैसे यह परमाणु इस स्कंधका है)

१२४. असंश्लिष्ट स्वजात्युपचरित असद्भूत व्यवहार (जैसे ये पुत्र स्त्री आदि इस जीवके हैं आदि कथन)

१२५. संश्लिष्ट विजात्युपचरित असद्भूत व्यवहार (जैसे यह शरीर इस जीवका है, आदि कथन)

१२६. असंश्लिष्ट विजात्युपचरित असद्भूत व्यवहार (जैसे यह धन वैभव मेरा है आदि कथन)

१२७. संश्लिष्ट स्वजातिविजात्युपचरित असद्भूत व्यवहार (जैसे आभूषणसज्जित कन्या मेरी है आदि कथन)

१२८. असंश्लिष्ट स्वजातिविजात्युपचरित असद्भूत व्यवहार (जैसे यह ग्राम नगर मेरा है आदि कथन)

१२९. परकर्तृत्व अनुपचरित असद्भूत व्यवहार (जैसे पुगद्लकर्म ने जीवको रागी कर दिया आदि कथन)

१२९A. परभोक्तृत्व अनुपचरित असद्भूत व्यवहार (जैसे जीव पुद्गल कर्मको भोगता है आदि कथन)

१२९B. परकर्तृत्व उपचरित असद्भूत व्यवहार (जैसे जीव घट आदिका कर्ता है इत्यादि कथन

१२९C. परभोक्तृत्व उपचरित असद्भूत व्यवहार (जैसे जीव घट पट आदिका भोक्ता है इत्यादि कथन)

१३०. परकर्मत्व असद्भूत व्यवहार (जैसे जीवके द्वारा ये पुण्य पाप बनाये गये आदि कथन)

१३१. परकरणत्व असद्भूत व्यवहार (जैसे जीव कषायभावके द्वारा पौद्गलिकर्मोंको बनाता है आदि कथन)

१३२. परसंप्रदानत्व असद्भूत व्यवहार (जैसे पिताने पुत्रके लिये मकान बनाया आदि कथन)

१३३. परापादनत्व असद्भूत व्यवहार (जैसे जीवसे इतने कर्म झड़कर अलग हो गये आदि कथन)

१३४. पराधिकरणत्व असद्भूत व्यवहार (जैसे जीवमें कर्म ठसाठस भरे हुए हैं आदि कथन)

१३५. परस्वामित्व असद्भूत व्यवहार (जैसे मेरा यह धन वैभव शरीर आदि है का कथन)

१३६. स्वजातिकारणे स्वजातिकार्योपचारक व्यवहार (जैसे हिंसा आदिक दुःख ही हैं, आदिका प्रतिपादन)

१३७. एकजातिकारणे अन्यजातिकार्योपचारक व्यवहार (जैसे अन्य धन प्राण हैं आदि कथन)

१३८. स्वजातिकार्ये स्वजातिकारणोपचारक व्यवहार (जैसे श्रुत ज्ञान भी मतिज्ञान है आदि कथन)

१३९. एकजातिकार्ये अन्यजातिकारणोपचारक व्यवहार (जैसे घटाकार परिणत ज्ञान घट है आदि कथन)

१४०. एकजात्यल्पे अन्यजातिपूर्णोपचारक व्यवहार (जैसे राजघरानेमें यह नौकर सर्वव्यापक है आदि कथन)

१४१. स्वजात्यल्पे स्वजातिपूर्णोपचारक व्यवहार (सम्यक् मतिज्ञान केवल ज्ञान है आदि कथन)

१४२. एकजात्याधारे अन्यजात्याधेयोपचारक व्यवहार (जैसे मन्चपर बैठकर विद्वान प्रवचन करे तो कहना इस मंचने बड़े प्रवचन किये)

१४३. स्वजात्याधारे स्वजात्याधेयोपचारक व्यवहार (इस गुरुके उदरमें

हजारों शिष्य पढ़े हैं)

१४४. एकजात्याधेये अन्यजात्याधारोपचारक व्यवहार (जैसे डलियामें केला रखकर बेचने वाले को केला कहकर पुकारना)

१४५. स्वजात्याधेये स्वजात्याधारोपचारक व्यवहार (जैसे मां की गोदमें बैठेहुए बालकका नाम लेकर मांको पुकारना)

१४६. तद्वति तदुपचारक व्यवहार (जैसे लाठीवाले पुरुषको लाठी कहकर पुकारना)

१४७. अतिसामीप्ये तत्त्वोपचारक व्यवहार (जैसे चरम (अंतिम) भवसे पूर्वके मनुष्यभवको भी चरम कहना)

१४८. भाविनि भूतोपचारक व्यवहार (जैसे ८ वें गुणस्थानमें औपशमिक या क्षायिक भाव कहना)

१४९. तत्सदृशकारणे तदुपचारक व्यवहार (जैसे कर्मोदयजनित विकार इस जीवके लिये शल्य हैं आदि कथन)

१५०. सदृशे एकत्वोपचारक व्यवहार (जैसे गेहूँ दानोंके ढेरको गेहूँ एक वचन कहकर कहना)

१५१. आश्रये आश्रयी-उपचारक व्यवहार (जैसे राजा प्रजाके गुण दोषोंको उत्पन्न करता है आदि कथन)

॥ इति नयचक्र प्रकाश समाप्त ॥

मनोहरवर्णी सहजानंद

मुद्रक :- अशोका प्रिंटिंग प्रेस, चौक बाजार सरधना।

पाठ २२ अवाप्तिनय

पदार्थको शीघ्र सुगमविधिसे निःसंशय यथार्थ समझनेके लिये अन्यभी दृष्टियां याने नय हैं। इन नयोंमें जो अभेदपरक नय है वे निश्चयनय हैं,जो भेदपरक नय वे व्यवहारनय हैं। वे नय इस प्रकार हैं—

१५२. द्रव्यनय, (जैसे-आत्मतत्त्व चिन्मात्र है आदि परिचय)

१५३. पर्यायनय, (जैसे-आत्माको दर्शन ज्ञान आदि मात्र देखना आदि परिचय।

१५४. अस्तित्वनय (जैसे-अपने द्रव्यक्षेत्रकालभावसे आत्माका अस्तित्व जानना)

१५५. नास्तित्वनय(जैसे-परके द्रव्यक्षेत्रकालभावसे आत्माका नास्तित्व जानना)

१५६. अस्तित्वनास्तित्वनय (जैसे-स्वपरद्रव्यक्षेत्रकालभावसे आत्माको अस्तित्वनास्तित्ववान् जानना आदि।)

१५७. अवक्तव्यनय (जैसे-युगपत्स्वपरद्रव्यक्षेत्रकालभावसे कहा जाना अशक्य होनेसे आत्मा अवक्तव्य है ऐसा जानना।

१५८. अस्तित्वावक्तव्यनय (जैसे-स्वद्रव्यक्षेत्रकालभावसे तथा युगपत्स्वपरद्रव्यक्षेत्रकालभावसे आत्मा अस्तित्ववदवक्तव्य है ऐसा जानना आदि।)

१५९. नास्तित्वावक्तव्यनय (जैसे-परद्रव्यक्षेत्रकालभावसे तथा युगपत्स्वपरद्रव्यक्षेत्रकालभावसे आत्मा नास्तित्ववदवक्तव्य है।)

१६०. अस्तित्वनास्तित्वावक्तव्यनय (जैसे-स्वद्रव्यक्षेत्रकालभावसे, परद्रव्यक्षेत्रकालभावसे व युगपत्स्वपरद्रव्यक्षेत्रकालभावसे आत्मा अस्तित्वनास्ति-* *त्ववदक्तव्य है।)

१६१. विकल्पनय (जैसे-कोई एक वही जीव मनुष्य है पशु है आदि परिचय।

१६२. अविकल्पनय (जैसे-एक आत्मामात्र का प्रतिभास।

१६३. नामनय (जैसे-ज्ञायक नाम आत्माका रखा है आदि नामसे परिचय।

१६४. स्थापनानय (जैसे-देहरूप पुदगलस्कंधोंमें आत्माका प्रतिष्ठापन।

१६५. द्रव्यनय (जैसे-अतीत अनागत पर्यायोंमें आत्माका बोधन।

१६६. भावनय (जैसे-वर्तमान पर्यायमें आत्माका बोधन।

१६७. सामान्यनय (जैसे-गुण पर्यायोंमें व्यापक सामान्य का बोधन।

१६८. विशेषनय (जैसे-सदा न रहनेवाले नरनारकादि जीवका बोधन।

१६९. नित्यनय(जैसे-नाना प्राणिभेदोंको धारण करनेवाले एक आत्माका बो०।

१७०. अनित्यनय (जैसे-अनवस्थायी मनुजादिवेशी आत्माका बोधन।

१७१. सर्वगतनय (जैसे-ज्ञानमुखेन सर्वज्ञेयवर्ती आत्माका बोधन।

१७२. असर्वगतनय (जैसे-स्वात्मप्रदेशवर्ती आत्माका बोधन।

१७३. शून्यनय (जैसे-सर्वपरभावशून्य केवल आत्माका बोधन।

१७४. अशून्यनय. जैसे-सर्वज्ञेयाकाराक्रान्त आत्माका बोधन ।
१७५. ज्ञानज्ञेयाद्वैतनय, जैसे-ज्ञेयाकारपरिणत ज्ञानके एकपनेमा बोधन ।
१७६. ज्ञानज्ञेयद्वैतनय(जैसे-ज्ञेयाकारकरम्बित आत्माके अनेकपनेका दर्शन
१७७. नियतिनय जैसे-शाश्वत ज्ञानस्वभावमें नियत आत्माका बोधन ।
१७८. अनियतिनय (जैसे-औपाधिकविभावरूप अनियतभाववान आत्माका बो
१७९. स्वभावनय(जैसे-संस्कारका आवश्यकतासे शून्य परिपूर्ण आत्माका बोध
१८०. अस्वभावनय (जैसे-संस्कारवशवर्ती अल्पज्ञ आत्माका बोधन ।
१८१. कालनय (जैसे अपने समयपर विपच्यमान भावयुक्त आत्माका बोधन
१८२. अकालनय(जैसे-उदीरणादिरूप असमयपच्यमान भावयुक्त आत्माका बो
१८३. पुरुषकारनय (जेसे-पुरुषार्थकी प्रधानतासे साध्यसिद्धि होनेका बोध
१८४. दैवनय (जैसे-कर्मोदयकी प्रधानतासे साध्यसिद्धि होनेका बोध ।
१८५. ईश्वरनय (जैसे-कर्मविपाकबलाधानसे परतन्त्रताके अनुभवका परिचय
१८६. अनीश्वरनय(जैसे-अपनेही स्वरूपसे प्रकट स्वतंत्रविलासके अनुभवका बो
१८७. गुणिनय,जैसे-गुणपुज्ज आत्माके अभिमुख उपयोगकी गुणग्राहिताका बो
१८८. अगुणिनय, जैसे-सर्वत्र उपयोगवान आत्माकी साक्षिताका परिचय ।
१८९. कर्तृनय, जैसे-अपनेको कर्मविपाकप्रतिफलन का कर्ता समझना ।
१९०. अकर्तृनय,जैसे-कर्मविपाकप्रतिफलनको अस्वभाव जान मात्र ज्ञाता हो
१९१. भोक्तृनय,जैसे-विभावानुरागी आत्माके सुख दुःखादि भोगनेका परिच
१९२. अभोक्तृनय,जैसे विवेकी आत्माके सुख दुःखादिपनेकी साक्षिताका बो
१९३. क्रियानय,जैसे,चारित्रप्रधान आत्माके ज्ञाननिधिकी साध्यताकी सिद्धिकाब
१९४. ज्ञाननय,जैसे-विवेक बुद्धिकी प्रधानतासे आत्माके साध्यकी सिद्धि का ब
१९५. व्यवहारनय,जैसे-जीवको कर्मबन्ध व कर्ममोक्ष दो में रहनेवाला दिखान
१९६. निश्चयनय,जैसे-बन्ध,मोक्ष किसीभी स्थितिमें मात्रशुद्धआत्माको दिख
१९७. अशुद्धनय, जैसे-औपाधिक स्थितियोंमें जीवका सोपाधिस्वभाव दीखन
१९८. शुद्धनय, जैसे-केवल आत्मद्रव्यका निरुपाधिस्वभाव दीखना ।
१९९. ऊर्ध्वसामान्यनय, जैसे-त्रैकालिकपर्यायोंमें मात्रएक आत्मद्रव्य दीख
२००. ऊर्ध्वविशेषनय, जैसे-एक आत्माके त्रैकालिक नाना पर्यायोंका दीख
२०१. निमित्तस्वनिमित्तदृष्टि, जैसे-नवीन कर्मास्रवके निमित्तभूत द्रव्य
प्रत्ययके निमित्तपनेके निमित्तरूप रागादिभावका परिचय
२०२. सादृश्यनय, जैसे-पुण्य पाप कर्मको कर्मत्वदृष्टिसे एकरूप देखना आदि
२०३. वैलक्षण्यनय, जैसे प्रकृति आदिके भेदसे पुण्य पाप कर्ममें अन्तर जान